Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

पुत्र तणा सुख रोगला,
खाज रोग तणे दिष्टंत।

पुण्य के उदय से होने वाला सुख खुजली के समान है। प्रारंभ में अच्छा लगता है परिणाम अच्छा नहीं होता।
– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 18 • 02 फरवरी - 08 फरवरी 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 31-01-2026 • पेज 12 ₹ 10 रुपये

आचार्य की आज्ञा और धर्म के प्रति जागरुक रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

मर्यादाओं के प्रति जागरुक रहने का प्रयास करना चाहिये : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिसवसीय समारोह का शिखर दिवस

संघ और संगठन का होता रहे विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

162वें मर्यादा महोत्सव पर
युगप्रधान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

मर्यादोत्सव आज मर्यादा गुण गाएं हम ।
तेरापथ सरताज स्वामीजी को ध्याएं हम।
स्वामीजी को ध्याएं गाएं शासन गौरव गान।।
आत्मा का कल्याण करें हम आत्मा आस्था स्थान।
आत्मा, आत्मा, आत्मा, आत्मा, आत्मा का निध्यान ।।1।।
धर्मसंघ की सेवा खातिर मन में हो उत्साह ।
गण मेरा है मैं गण का हूं स्पष्ट रहे वर राह ।।2।।
रहना भीतर जीना बाहर निश्चयमय व्यवहार ।
सामूहिकता में एकाकीपन का हो आधार ।।3।।
गुरु आज्ञा-इंगित के प्रति हो समुचित आदरभाव।
संघ सदस्यों में इतरेतर हो मैत्री-सद्भाव ।।4।।
'महाश्रमण' छोटी खाटू में माघमहोत्सव रंग।
वीर भिक्षु तुलसी बालूसुत प्रभुवन्दन स्मृति संग ।।5।।

लय : तेरापथ अधिराज भिक्षु स्वामी पधारो जी

छोटी खाटू।
25 जनवरी 2026

माघ शुक्ला सप्तमी।

राजस्थान के छोटी खाटू नगर में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के महाकुम्भ- १६२ वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिसवसीय समारोह का शिखर दिवस। मर्यादा समवसरण में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुनि दिनेशकुमार जी ने जयघोष के साथ मर्यादा गीत का संगान किया। तदुपरांत समणीवृंद, साध्वीवृंद व संतवृंद पृथक-पृथक गीत का संगान किया। तत्पश्चात् साध्वीप्रमुखा विश्रुत विभाजी ने समुपस्थित जनता को उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के ऊर्ध्वारोहण का प्राणतत्व है- मर्यादा। सामान्यतया मर्यादा को बंधन कहा जाता है परन्तु वस्तुतः यह हमारे जीवन विकास के लिए आवश्यक घटक तत्त्व है। मर्यादा हमारे जीवन का सुरक्षा कवच है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं का निर्माण किया। उन्होंने संघ की एकता, अखंडता और पवित्रता बनाए रखने के लिए मर्यादाएं बनाई थी। आचार्य भिक्षु अन्तर्दर्शन संपन्न थे और भविष्य दृष्टा थे। तेरापंथ धर्मसंघ आज्ञा निष्ठ, मर्यादा निष्ठ, प्रशासन निष्ठ, समर्पण निष्ठ धर्मसंघ है, इस धर्मसंघ में हम सब आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव की सेवा में रहते हुए विकास के शिखरों तक पहुंचने का प्रयत्न करें। साध्वीप्रमुखाश्री के उद्बोधन के पश्चात् तेरापंथ धर्मसंघ के शिखर पुरूष, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व होता है। व्यक्तिगत जीवन में और संगठन में भी अनुशासन की आवश्यकता होती है। दुनिया में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक- आध्यात्मिक आदि संगठन मिलते हैं। आज हम जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सव के आयोजन को मनाने के लिए यहां उपस्थित हैं। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ जैन शासन की ही एक शाखा है। यह मुख्यतया एक धार्मिक आध्यात्मिक संगठन है, नितान्त सामाजिक संगठन नहीं है। इस संगठन की अपनी मर्यादा, व्यवस्थाएं हैं और मर्यादाओं के संदर्भ में व्यवस्थाओं के आलोक में आज का यह आयोजन हो रहा है। इसके आयोजन के प्रारंभ को 161 वर्ष बीत गए हैं और यह 162 वां आयोजन है। परम पूज्य प्रज्ञा पुरुष श्रीमद्जयाचार्य ने यह समारोह शुरू किया था। किन्तु इस आयोजन का आधार यह मर्यादा पत्र है जो आचार्य भिक्षु से संदर्भित है। इस पन्ने पर जो लिखत है उस पर माघ शुक्ला सप्तमी तिथि उल्लिखित है। इस मर्यादा पत्र पर लिखी हुई मर्यादाओं से संबद्ध यह आयोजन है। तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य, आचार्यश्री भिक्षु स्वामी हुए। उन्होंने एक आचार्य की परंपरा का विधान किया। उसके अनन्तर आचार्य परंपरा चली। वर्तमान में भी हमारा धर्मसंघ गतिमान है। इस मर्यादा पत्र में संगठन की दृष्टि से कई बातें उल्लिखित हैं। आचार्यश्री ने मर्यादाओं का वाचन कर उनका विवेचन किया और चारित्रात्माओं को उन मर्यादाओं का त्याग और पचखाण कराया। आचार्यप्रवर ने आगे कहा कि हमारा धर्मसंघ अध्यात्म आधारित है और अध्यात्म में मूल तत्व आत्मा है। इसलिए चारित्रात्माओं में आत्मनिष्ठा का भाव होना चाहिए कि हमने आत्मोदय के लिए यह साधुपन लिया है। हम आत्मवाद को मानकर, उसके प्रति निष्ठा रखते हुए आगे बढ़ें। साधना की दृष्टि से यह संघ हमारा घर है अतः अपनी क्षमतानुसार मैं इस संघ की सेवा करूं। जहां तक संभव हो अपने साधुपन को अच्छा रखते हुए, दूसरों की सेवा का प्रयास हो। सबके प्रति शिष्टाचार व सद्भावना रखने का प्रयास करना चाहिए। आज्ञा और आचार के प्रति निष्ठा का भाव हो। पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखण्ड आराधना का प्रयास हो। जहां भी रहें अपनी गलतियों को आलोयणा ले लेनी चाहिए। हमें यह जो चारित्र रूपी हीरा प्राप्त है, उसकी सुरक्षा के प्रति जागरूक रहें।

हमारे धर्मसंघ में मर्यादाओं के पालन में बहुत अच्छी जागरूकता है। श्रावक समाज के लिए भी श्रावक संदेशिका बनी हुई है, जिसमें श्रावकों से सम्बन्धित नियमावली है। इसमें श्रावक जीवन के व्यक्तिगत जीवन में की जाने वाली साधना तथा संस्थाओं आदि के संदर्भ में नियम है, इससे काफी प्रश्नों का समाधान प्राप्त हो सकता है।

एक आचार, एक विचार, एक आचार्य, एक विधान और गुरु- ये पांच बातें एकता के सूत्र है। संगठन निर्मल रहे, संघ का विकास होता रहे, संघ का भविष्य अच्छा रहे। जहां तक संभव हो, संघ की यथायोग्य सेवा करने का प्रयास हो।

(शेष पेज 9 पर)

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का प्रथम दिवस

विनय, समर्पण और निष्काम भाव से होती रहे सेवा : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी खाटू।
23 जनवरी 2026

माघ शुक्ला पंचमी।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म के मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का प्रथम दिवस। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातस्पवी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी विशाल मंच के मध्य विराजमान हुए। आचार्य प्रवर ने मंगल महामंत्रोच्चार के साथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की।

मुनिश्री दिनेशकुमारजी की अगुवाई में चतुर्विध धर्मसंघ ने जय घोष करते हुए 'मर्यादा गीत' का संगान किया। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मर्यादा के आधारभूत 'मर्यादाओं का उत्सव हम आज मनाएंगे' गीत का संगान किया। तदुपरान्त साध्वी वृंद की ओर से साध्वी मुदितयशाजी ने और संतवृंद की ओर से मुनि कुमारश्रमण जी ने सेवा में नियोजित करने हेतु प्रार्थना की। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने सेवा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए अपने उद्बोधन में कहां कि सेवा पूरे धर्मसंघ को एकता के धागे में बांधने वाला सशक्त सूत्र है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ

प्राप्त हुआ है, जिसे नंदनवन की उपमा से उपमित किया गया है। संघ में साधना करने वाले हर साधक को साधना के आनंद का अनुभव हो सके इसके लिए संघ निरंतर प्रयत्नशील रहता है। यह आदि-व्याधि को हरने वाला और समाधि प्रदान करने वाला विशिष्ट धर्मसंघ है। तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा विलक्षण है। हम सबमें अहंकार और ममकार विगलित होना जाए और निर्जरा की उत्कृष्ट भावना से हम सेवा भावना को जीवन में विकसित करते रहें। इसी बीच युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री राजेन्द्र सिंह शेखावत उपस्थित हुए उन्होंने आचार्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की आचार्य परंपरा के प्रति आस्था, सम्मान व श्रद्धा का भाव है जो मुझे यहां खींच लाया है। आज मर्यादा महोत्सव का प्रथम दिन है, जो सेवा के लिए निर्धारित है, जिसका संकल्प भी आपसे प्राप्त होगा। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि ऐसे महापर्व के दौरान आपके दर्शन का सु-अवसर मिला है। भारत की संस्कृति से पूरे विश्व को प्रेरणा मिलती है। आपकी सन्निधि से सेवा का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। आचार्य प्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि आज मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन में केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत का आना हुआ है। कई राजनेता भी एकदम श्रावक जैसे आ जाते हैं। राजनीति भी सेवा का बहुत बड़ा क्षेत्र है। उसमें नैतिकता, धार्मिकता व शुद्धता बनी रहे। मर्यादा महात्सव के प्रथम दिवस पर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने चतुर्विध धर्मसंघ को पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि आज का कार्यक्रम सेवा से संबंधित है। सेवा एक ऐसा तत्त्व है जो पुण्य बंध का एक कारण बन जाता है, जिससे पुण्य की ऊंची प्रकृति तीर्थंकर नाम गोत्र का बंध हो सकता है। हमारे धर्मसंघ की मान्यता है कि पुण्य का बंध निर्जरा के साथ होता है। सेवा कार्य को हम कर्म-निर्जरा के भाव से करें। सेवा विनय, समर्पण और निष्काम भाव से होती है तो वह सेवा बहुत शांति भी देनी चाहिए, जिससे चित समाधि रहे। हमारे धर्मसंध में सेवा का महत्त्व है और सेवा केन्द्रों की स्थापना होना एक सुंदर व्यवस्था है। हमारे जीवन में संयम की साधना हो और साथ में दूसरों की यथायोग्य सेवा करने का प्रयास हो तो जीवन काफी अच्छा रह सकता है। सेवा के अनेक क्षेत्र हो सकते हैं। जहां सेवा की बात हो तो मौके पर आगम स्वाध्याय आदि कार्यों को भी छोड़कर सेवा कार्य में जुड़ जाना चाहिए। सेवा करना बहुत बड़ी बात होती है। पूज्य प्रवर ने तेरापंथ धर्मसंघ के सेवा केन्दों पर आगामी वर्ष में सेवादायी साध्वियों की नियुक्तियां की। तदुपरान्त आचार्य प्रवर ने साधु-साध्वियों, समणियों व मुमुक्षुओं सहित चतुर्विध धर्मसंघ को सेवा धर्म के प्रति जागरूक रहने और तन, मन व वचन से भी सेवा करते रहने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्य प्रवर ने कहा कि सभी में सेवा की पुनीत भावना का विकास होना अपेक्षित है। मंगल प्रवचन के पश्चात् जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों ने आचार्य प्रवर के समक्ष 'जयतिथि पत्रक' लोकार्पित किया तथा मित्र परिषद ने तिथि दर्पण व तिथि पत्रक को आचार्यश्री के समक्ष अर्पित किया। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

अमृतवाणी के अध्यक्ष ललित कुमार दुगड़, आचार्य भिक्षु समाधि-स्थल सिरियारी के मर्यादा कोठारी, आचार्यश्री तुलसी शांति प्रतिष्ठान के दीपक आंचलिया, प्रेक्षाध्यान एकेडमी के भैंरूलाल चौपड़ा, प्रेक्षा इंटरनेशनल के अध्यक्ष अरविंद संचेती, जय तुलसी फाउण्डेशन की ओर से बाबूलाल सेखानी, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सुनिता बेताला, दिव्या बेताला ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ कन्या मंडल ने अपनी प्रस्तुति दी। आचार्य प्रवर ने कन्या मंडल को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिवस के आयोजन का समापन आचार्य प्रवर के मंगल पाठ के साथ हुआ।

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का द्वितीय दिवस

आचार्य की आज्ञा और धर्म के प्रति रहें जागरूक : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी खाटू।
24 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सव का आज द्वितीय एवं मध्यवर्ती दिवस। आज के कार्यक्रम का शुभारंभ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ।

सर्वप्रथम छोटी खाटू तेरापंथ समाज ने गीत का संगान किया। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री बच्छराज बेताला ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तत्पश्चात मुमुक्षु बहिनों ने गीत का संगान किया। तदुपरांत मुख्य मुनि महावीरकुमारजी ने समुपस्थित विशाल श्रद्धालुओं के समूह को उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि हम बहत सौभाग्यशाली हैं कि हमें मानव जीवन, जैन धर्म और भैक्षव शासन मिला है। यह छोटी खाटू की धरा पर हो रहा। 162वां मर्यादा महोत्सव अपने आप में विलक्षण हैं क्योंकि यह आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अंतर्गत आया है तथा योगक्षेम वर्ष की पूर्व भूमिका में यह महोत्सव आया है और छोटी खाटू की धरा पर पहली बार हो रहा है। यह वर्ष हम भिक्षु चेतना वर्ष के रूप में मना रहे हैं। आचार्य भिक्षु की चेतना एक पवित्र चेतना थी, उस पवित्रता को हम अपने भीतर जाग्रत करें तो, सही मायनों में यह भिक्षु चेतना वर्ष बन पाएगा। हमारे सम्मुख योगक्षेम वर्ष, इस योगक्षेम वर्ष में हम ऐसा प्राप्त करें, जिससे हम सब और हमारा धर्मसंघ अध्यात्म की दिशा में नए सोपनों को गढ़ें। आज 162वें मर्यादा महोत्सव के दूसरे

दिवस अर्थात माघ शुक्ला षष्ठी के दिन तेरापंथ धर्मसंघके दशमाधिशास्ता, प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का पट्टोत्सव दिवस भी था। इस मंगल अवसर पर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सवके त्रिदिवसीय समारोह का आज मध्यवर्ती दिवस है। आज का दिन परम पूजनीय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के आचार्य पदाभिषेक का भी दिन है। आज के दिन हमारे धर्मसंघ में अपूर्व महोत्सव हुआ था। अपूर्व इसलिए कि इस महोत्सव में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जो पट्टोत्सव हुआ उनमें उनके गुरू आचार्यश्री तुलसी ने पछेवड़ी की रस्म पूरी की। परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ऐसे पहले आचार्य थे। जो अपने गुरू की विद्यमानता में आचार्य बने। इसलिए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी तेरापंथ धर्मसंघ के विलक्षण आचार्य बने। वैसे आचार्यश्री तुलसी भी विलक्षण आचार्य थे जिन्होंने आचार्य पद का परित्याग कर अपनी विद्यमानता में ही अपने युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। आज के ही दिन उनका आचार्य पदारोहण हुआ। आचार्य प्रवर ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा की भावना बहुत अच्छी है। आचार्य की आराधना, गण की आराधना, संघ की आराधना, मर्यादाओं का पालन, संघ के प्रति अहोभाव रखने और उसके विकास में सहभागी बनने का प्रयास करना चाहिये। हम सभी आज्ञा, मर्यादा, आचार्य की आज्ञा और धर्म के प्रति जागरूक रहें।

आज जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के वार्षिक अधिवेशन का दिन है। यह संस्था 'संस्था शिरोमणी' के रूप में प्रतिष्ठित है। माघ शुक्ला षष्ठी का दिन गुरुदेव तुलसी के समय से अधिवेशन का निर्धारित दिन चला आ रहा है। यह चुनाव का दिन भी है। तेरापंथी महासभा धर्मसंघ की धार्मिक आध्यात्मिक सेवा करती रहे।

(शेष पेज 9 पर)

आचार्यश्री तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का भव्य शुभारंभ

नाथद्वारा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित और तेरापंथ युवक परिषद नाथद्वारा द्वारा समर्थित एटीडीसी का भव्य शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष अभातेयुप पवन मांडोत ने सभी का स्वागत करते हुए एटीडीसी की स्थापना की यात्रा को बताते हुए सभी युवाओं को इससे अधिक से अधिक जुड़ने का आह्वान किया। तेरापंथ युवक परिषद नाथद्वारा के अध्यक्ष प्रकाश मेहता, सभाध्यक्ष विश्वजीत कर्णावट, उद्घाटनकर्ता दिनेश पोखरना, राष्ट्रीय प्रभारी पीयूष लूनिया, मेवाड़ संयोजक संदीप हिंगड़, पीएमसीएच से मुख्य डॉ वासनी, श्रीनाथ मंदिर ट्रस्ट से सुधाकर शास्त्री, परिसर मालिक अंबालाल ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए अभातेयुप महामंत्री सौरभ पटावरी ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत के संकल्प को क्रियान्वन में लाते हुए मात्र 108 दिन के अंदर ही आज यह दूसरे राष्ट्रीय स्तर के आचार्यश्री तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का उद्घाटन नाथद्वारा क्षेत्र में हुआ है, जिसमें मेवाड़ का पहला केंद्र उदयपुर में स्थापित हुआ, इसके लिए पूरी टीम को बहुत-बहुत साधुवाद।

आभार अभातेयुप सदस्य और नाथद्वारा एटीडीसी प्रभारी भूपेश जी खमेसरा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर अभातेयुप से प्रवृत्ति सलाहकार सुनील चंडालिया, अभिषेक पोखरना, जितेश पोखरना, अजीत छाजेड़, आशीष दक, कुलदीप मारू, अभिषेक संचेती, अशोक चोरड़िया पीएमसीएच से वर्षानी, डॉ टीम सहित प्रबंध मंडल और कई युवा सदस्य उपस्थित थे।

मर्यादा क्वेस्ट प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

साउथ हावड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा -3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुमार मर्यादा क्वेस्ट- चलो खोजें मर्यादा का मर्म' प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा द्वारा गंगेज गार्डन में किया गया।

इस प्रतियोगिता में तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा, पूर्वान्चल, साउथ कलकत्ता, उत्तर हावड़ा, सॉल्टलेक, मध्य कोलकाता टॉलीगंज, बेहाला ने सहभागिता दर्ज की। प्रतियोगिता में कुल 12 टीमों में कुल 58 बहनों ने भाग लिया। इस अवसर पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा तेरापंथ एक प्राणवान संघ है। इसकी प्राणशक्ति को पोषण देने वाला तत्व मर्यादा है। मर्यादा बंधन नहीं मुक्ति का मार्ग है। मर्यादा मानव जीवन की सबर्वोत्तम निधि है। मर्यादा सत्यं, शिवं सुन्दर की उपलब्धि है।

आचार्य भिक्षु ने संघ को दीर्घजीवी बनाने के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया। सभी बहिनें खुब विकास करती रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा की अध्यक्ष श्रीमती अंजू चोरड़िया ने दिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यसमिति सदस्य सुषमा बैंगानी, पुखराज सेठिया, पूर्वांचल अध्यक्ष बबीता तातेड, तेरापंथी सभा, साउथ हावड़ा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

यूरिन एनालाइज़र मशीन का हुआ शुभारंभ

पीलीबंगा। तेरापंथ युवक परिषद, पीलीबंगा द्वारा संचालित जय भिक्षु आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक लैब में नौलखा परिवार द्वारा यूरिन एनालाइज़र मशीन भेंट की गई।

मशीन का शुभारंभ जैन विधि-विधान अनुसार संस्कारक राजकुमार छाजेड़ द्वारा नमस्कार महामंत्र के पश्चात् विधिवत रूप से किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ समाज के अध्यक्ष मालचंद पुगलिया एवं युवक परिषद पीलीबंगा अध्यक्ष हेमंत बांठिया ने नौलखा परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया।

युवक परिषद के मंत्री रूपेश सुराणा ने बताया कि परिषद परामर्शक महेंद्र नौलखा, लैब प्रभारी तरुण एवं पंकज बोथरा के लिए भी साधुवाद व्यक्त किया गया।

सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस पर हुआ कार्यशाला

हैदराबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद विश्व कैंसर दिवस पर सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम व बचाव हेतु निःशुल्क पेप्स स्मियर टेस्ट शिविर का आयोजन करने जा रही है।

सहमंत्री मीनाक्षी सुराणा ने बताया कि डी वी कोलोनी तेरापंथ भवन सिकंदराबाद में एक सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें स्पीकर के रुप में उपस्थित थीं डॉ प्रेरणा भंडारी। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

अध्यक्ष नमिता सिंघी ने आगंतुक सभी बहनों का स्वागत किया। डॉ भंडारी का परिचय उपाध्यक्ष प्रभा दुगड ने दिया।

डॉ प्रेरणा भंडारी ने महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर क्या है?, क्यों होता है?,इसके प्रारंभिक लक्षण क्या हैं? और इससे बचने के लिए पेप स्मियर टेस्ट की क्या भूमिका है? आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उपस्थित महिलाओं की शंकाओं और जिज्ञासा का सटीक समाधान दिया।

जीवन विज्ञान कार्यशाला का सफल आयोजन

हावड़ा।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशानुसार युगप्रधान आचार्यश्री महामण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा गंगेज गार्डन में किया गया। जिसका विषय था- शिक्षा और संस्कार।

इस कार्यक्रम में स्कूल के बच्चे भी अच्छी संख्या में शामिल हुए। इस अवसर पर निर्धारित विषय पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- व्यक्तित्व विकास का महत्त्वपूर्ण घटक है- शिक्षा। शिक्षा जीवन के अभ्युदय की दिशा है। शिक्षा जीवन की निर्माणशिला व आधाराला। शिक्षा सत्यम, शिवं, सुंदरम का समान्चत रूप है।

शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु जैसा आचारण करता है और उपहास का पात्र होता है।

शिक्षा के साथ सुसंस्कारों का होना जरूरी है। विनम्रता, सहिष्णुता, श्रमशीलता आदि सद्गुणों से व्यक्ति संस्कार संपन्न बन सकता है।

कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के प्रचार-प्रसार मंत्री पंकज दुधेड़िया विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में समाज जन भी अच्छी संख्या में उपस्थित रहे।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

पर्वत पाटीया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद पर्वत पाटीया द्वारा भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन मुनि डॉ मदन कुमार जी आदि ठाणा -3 के सान्निध्य में किया गया।

इस कार्यशाला की अध्यक्षता अभातेयुप के महामंत्री सौरभ पटावरी ने की। विशेष उपस्थिति चौका सत्कार के प्रवृति सलाहकार प्रकाश छाजेड व जेटीएन के कार्यकारी सम्पादक पवन फुलपगर आदि की रही। मुनि श्री ने आचार्य भिक्षु को समझने के लिए तीन मुख्य बाते बताई। उन्होंने कहा की भिक्षु स्वामी वो है जो रोग से आरोग्य की ओर अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर ले जाता है।

भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी और लौकिक लोकोत्तर, दया व दान के प्रकार के बारे में जानकारी दी। मुनि संयम कुमार जी ने अणुव्रत गीत का संघान कीया गया। मुनि कल्प कुमार जी ने कहानी के माध्यम से बताया।

महामंत्री ने युवा वर्ग के लिए इस कार्यशाला के माध्यम से अपने आध्य प्रवतक को जानने और उनके सिद्धांतों व मर्यादाओं को अपने जीवन में उतारने के बारे में बताया स्वागत उद्बोधन तेयुप अमित जी बुच्चा द्वारा किया गया। तेयुप भजन मंडली से भिक्षु स्वामी पर गितीका व महिला मंडल द्वारा तुलसी अष्टकम का संगान किया गया। आभार तेयुप मंत्री अशोक कोचर द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 फरवरी - 08 फरवरी 2026

162वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष

मर्यादा : गृहस्थ जीवन के लिए एक प्रेरणादायी आयाम

● श्रेयाँस कोठारी ●

मर्यादा महोत्सव केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि तेरापंथ धर्मसंघ की वह धड़कन है, जो हजारों साधु-साध्वियों और लाखौं गृहस्थों को एक सूत्र में बांधती है। यह केवल तिथि या परंपरा नहीं- यह संघ की आत्मा का उत्सव है। संघ की स्थापना से लेकर आज तक, प्रत्येक आचार्य ने मर्यादाओं को केवल शास्त्रों में नहीं रखा, बल्कि अपने जीवन में जिया है। इसी कारण तेरापंथ की मर्यादाएँ उपदेश नहीं, बल्कि प्रेरणा बनकर हर गृहस्थ के जीवन को दिशा देती हैं। तेरापंथ में मर्यादा केवल नियम नहीं- मर्यादा वह आभा है जो साधना को दिशा देती है और जीवन को शुद्धता का आलोक। मर्यादा महोत्सव हमें यह स्मरण कराता है कि जैसे साधु-साध्वी 'नियम में रमण करते हैं, वैसे ही गृहस्थ 'मर्यादा में जीवन' जीकर अपने घर को- एक छोटा आत्म-रमण तीर्थ, एक शांत साधना-कक्ष, एक अनुशासन-आश्रम बना सकता है। पिछले कई वर्षों से मर्यादा महोत्सव का साक्षी रहा हूँ। मैंने अनुभव किया है कि आचार्यश्री केवल साधु-साध्वी समाज को ही नहीं, गृहस्थों को भी बार-बार यह प्रेरणा देते हैं कि जीवन में अनुशासन और मर्यादा अनिवार्य है। एक बार एक युवक आचार्यश्री से मिलने पहुँचा। उसने पूछा- 'आज की भाग-दौड़ में मर्यादा कैसे निभे? व्यवसाय, रिश्ते, मोबाइल, तनाव-सब अपनी मर्यादा खो रहे हैं... क्या मर्यादा केवल साधु-साध्वियों के लिए है? आचार्यश्री मुस्कुराए और बोले- 'मर्यादा दीवार नहीं जो बाँध दे, मर्यादा वह दिशा है जो जीवन को बचा ले। संघ-संयम साधु-साध्वी का मार्ग है, पर जीवन-संयम-गृहस्थ का सुह्रद साथी।'उसी क्षण लगा- मर्यादा ही गृहस्थ जीवन का असली रक्षक है। आज के समय में 'गृहस्थ मर्यादा'- कैसी? गृहस्थ जीवन जिम्मेदारियों का महासागर है। पर यदि उसमें मर्यादा की नाव हो, तो वही जीवन साधना-यात्रा बन जाता है। गृहस्थ मर्यादा का अर्थ है- बिना साधु बने, साधना की सुगंध को जीवन में उतार लेना। समय की मर्यादा समय का संतुलन ही गृहस्थ का दैनिक तप है। वाणी की मर्यादा मधुर वचन घर को स्वर्ग बनाते हैं, कटु वचन नरक। डिजिटल मर्यादा परिवार के समय मोबाइल से दूरी- आधुनिक संयम। आर्थिक मर्यादा कमाई में ईमान, खर्च में विवेक, दान में प्रसन्नता। भोजन व दिनचर्या की मर्यादा अति से बचना- स्वास्थ्य और शांति का आधार। व्यवहार की मर्यादा घर दीवारों से नहीं, स्वभावों से बनता है। गृहस्थ भी साधक है अक्सर गृहस्थ सोचता है- 'हम साधना कैसे करें?' पर साधना केवल ध्यान-कक्ष में नहीं होती। क्रोध रोक लेना भी साधना है सत्य बोलना भी साधना है। मुस्कान देना भी साधना है दिन के अंत में आत्म-परख करना भी साधना है। छोटी-छोटी मर्यादाएँ ही गृहस्थ की बड़ी तपस्या हैं। बाहर से गृहस्थ, भीतर से साधक - यही तेरापंथी पहचान है। तेरापंथी गृहस्थः केवल परिवार का नहीं, संघ का भी साधक तेरापंथ की मर्यादा केवल व्यक्तिगत नहीं- संघात्मक है। साधु-साध्वी संघ की रीढ़ हैं, तो गृहस्थ उसकी शक्ति और आधारशिला। यदि साधु त्याग से संघ को आगे बढ़ाते हैं, तो गृहस्थ सहयोग से उसे स्थिरता देते हैं। संघ और श्रावक-दो नहीं, एक ही साधना के दो आयाम हैं। गृहस्थ की आध्यात्मिक मर्यादाएँ प्रतिदिन स्वाध्याय या ध्यान गुरु-आज्ञा के प्रति श्रद्धा सामायिक, प्रतिक्रमण, जप पर्वों में संयम आत्मचिंतन और मौन यही गृहस्थ का आंतरिक तप है। संघ के प्रति जिम्मेदारियाँ एक तेरापंथी गृहस्थ की मर्यादा है कि- संघ-एकता को सर्वोपरि रखे। समय की पाबंदी, वचन-पालन, जिम्मेदारी, सेवा-भाव - यही छोटे अनुशासन मिलकर बड़े संघ का निर्माण करते हैं। मर्यादा महोत्सव यह पूछता है- क्या हमारा घर मर्यादित है? क्या हमारी वाणी संयमित है? क्या हमारा जीवन अनुशासित है? क्या हम संघ के प्रति उत्तरदायी हैं? यदि उत्तर 'हाँ' है- तो वही सच्चा मर्यादा महोत्सव है। अंत में पुनः यही कहना चाहूँगा- मर्यादा बंधन नहीं- रक्षा है। तभी तेरापंथ की परंपरा तेजस्वी बनती है। और सच तो यह है- गृहस्थ यदि मर्यादित हो जाए, तो उसका घर ही सबसे सुंदर तीर्थ बन सकता है।

मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन

● मोहन भन्साली ●

मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन करें सकल सफल काज।
युगप्रधान महातपस्वी महाश्रमण है भैक्षण गण सरताज।।

मर्यादा पत्र बना तेरापंथ का अटूट आधार,
मर्यादा महोत्सव का बना मर्यादा पत्र श्रृंगार।
पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना ह्रदय का हार,
उत्तरोत्तर अनुशास्ताओं का बना प्राणों का प्राण।।
मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन करें सकल सफल काज!

कलयुग में सतयुगी संत मिला साक्षात,
महावीर के सिद्धांतों पर चल पड़ा श्रृद्धावान,
अंतिम स्थल बना संत भिक्षु का पहला पड़ाव,
पंचम आरे में त्रेतायुग का संकल्प था बलवान।।
मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन करें सकल सफल काज!

तेरह संत तेरह श्रावक, जोधपुर री हाट,
कवि राज रा तुका बना जय यश का नाम,
भिक्षु ने समर्पित किया हे! प्रभु यह तेरापन्थ,
जन-मानस का कल्याणकारी बना तेरापंथ सम्राट।।
मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन करें सकल सफल काज!

एक से बढ़कर एक मिला गण का बागवान,
भारी,राय महामनीषी जयाचार्य ने किया नवाचार,
मघवा माणक डाल कालूराम ने दिया युग अवतार,
तप, जप सिंचन से वटवृक्ष बना शीतल छायादार।।
मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन करें सकल सफल काज!

तुलसी महाप्रज्ञ ने खोल दिया प्रगति पथ का द्वार,
अणुव्रत प्रेक्षाध्यान प्राणवान बना युगानुकुल अवदान,
सात समंदर पार मानवता को दिया नैतिक उपहार,
साधना का शिखर पुरुष ज्योतिपुंज है नौ रत्नों की बाड़।
मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन करें सकल सफल काज!
मर्यादा के मंत्रदाता दीपा नन्दन करें सकल सफल काज।
युगप्रधान महातपस्वी महाश्रमण है भैक्षण गण सरताज।।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा 162वें मर्यादा महोत्सव पर नवीन घोषणाएं

- 2027 के लाडनूं, मर्यादा महोत्सव के पश्चात विहार कर सरदाशहर।
- हनुमानगढ़ गंगानगर अंचल में वर्ष 2027 की अक्षय तृतीया रायसिंहनगर में करने का भाव है।
- वैशाख शुक्ला नवमी - दशमी के कार्यक्रम श्रीगंगानगर में करने के भाव है।
- सूरतगढ़, पीलीबंगा, पदमपुर, फाजिल्का, लीलावाली, हनुमानगढ़ टाउन, हनुमानगढ़ स्पर्श करने का भाव ।
- 2029 - मर्यादा महोत्सव - चंडीगढ़
  2029 - चातुर्मास - महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, फागला, लुधियाना, पंजाब
- पंजाब यात्रा के साथ जम्मू जाने का भाव है। चंडीगढ़ यात्रा के समय शिमला जाने का भाव है।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा वर्ष 2026 हेतु घोषित चातुर्मास / विहार

साध्वी विशदप्रज्ञा जी	जैन विश्व भारती - लाडनूं	मुनि रमेशकुमार जी	बरपेटा रोड
साध्वी लब्धि यशा जी	जैन विश्व भारती - लाडनूं	मुनि आकाशकुमार जी	राजाराजेश्वरीनगर, बेंगलोर
साध्वी संगीतश्रीजी	जैन विश्व भारती - लाडनूं	मुनि विनीतकुमार जी	विजयनगर, बेंगलोर
साध्वी परमप्रभाजी	जैन विश्व भारती - लाडनूं	साध्वी पावनप्रभा जी	गांधीनगर, बेंगलोर
साध्वी मंजूयशाजी	जैन विश्व भारती - लाडनूं	साध्वी पुण्ययशा जी	चिकमंगलूर
साध्वी शुभप्रभाजी	जैन विश्व भारती लाडनूं	मुनि अलोककुमार जी	गदग
साध्वी शुभप्रभाजी	जैन विश्व भारती लाडनूं की ओर	मुनि अनंतकुमार जी	कोप्पल
साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय'	तेरापंथ भवन, कांदिवली	मुनि पुलकितकुमार जी	साहूकार पेठ, चेन्नई
मुनि सुधाकर जी	जयपुर की ओर	साध्वी संयमलता जी	सेलम
मुनि मदनकुमार जी	तेरापंथ भवन, सिटी लाइट, सूरत	साध्वी सिद्धप्रभा जी	तिरुपुर
मुनि कुलदीपकुमार जी	ठाणे	मुनि दीपकुमार जी	सिकंदराबाद
मुनि कोमलकुमारजी	पेटलावद	मुनि रश्मिकुमार जी	कटक भुवनेश्वर की ओर
मुनि हिमांशुकुमार जी	केशिंगा		
मुनि जिनेशकुमार जी	उत्तर हावड़ा		
मुनि प्रशांतकुमार जी	कटिहार		
मुनि आनंदकुमार जी	गुवाहाटी		

समणी वृंद हेतु निर्देश

समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी समणी पुण्यप्रज्ञाजी	मियामी, अमेरिका

सेमिनार एवं दर्द निवारण शिविर आयोजित

नई दिल्ली।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा दिल्ली और अध्यात्म साधना केंद्र के संयुक्त प्रयास से छतरपुर स्थित अध्यात्म साधना केंद्र में शाश्वत चिकित्सा, पुणे के सहयोग से भव्य सेमिनार एवं दर्द निवारण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर शाश्वत चिकित्सा के प्रख्यात साधक एवं प्रचारक डॉ. स्वामी भक्ति प्रकाश उपस्थित थे। शिविर में कई रोगियों ने उपचार के बाद त्वरित राहत महसूस की। उपचार पूरी तरह सुरक्षित और दुष्प्रभाव-रहित था, जिसमें अग्नि-जनित विकार, जोड़ों का दर्द, सर्वाइकल, आर्थराइटिस, साइटिका, माइग्रेन, एड़ी का दर्द, गैस, एसिडिटी और लिवर संबंधी समस्याओं सहित कई दीर्घकालिक रोगों में सहायता दी गई। कार्यक्रम के समापन पर डॉ. स्वामी भक्ति प्रकाश ने दिल्ली के छतरपुर स्थित अध्यात्म साधना केंद्र से देशभर में शाश्वत चिकित्सा के प्रचार-प्रसार, कार्यशालाओं और निःशुल्क वेबिनारों के माध्यम से लोगों को स्व-उपचार तकनीकों से सशक्त बनाने का संकल्प दोहराया।

संक्षिप्त खबर

मर्यादा क्वेस्ट का हुआ भव्य आयोजन

टिटिलागढ़। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ के द्वारा मर्यादा क्वेस्ट का भव्य आयोजन किया गया। अध्यक्ष भावना जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आज के कार्यक्रम से हम सभी को तेरापंथ धर्म संघ की मर्यादाओं एवं नियमों को जानने एवं सीखने मिलेगा। हम सभी को तेरापंथ धर्म संघ की मर्यादाओं को जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा की मर्यादा ही हमारे तेरापंथ धर्म संघ की प्राण है। उपाध्यक्ष दीपिका जैन ने सभी का आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि आप लोगों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को सफल बना दिया। आज के कार्यक्रम का कुशल संचालन सुभद्रा जैन ने किया।

एसएसबी परीक्षा का आयोजन

मदुरै। ज्ञानशाला मदुरै के तत्वावधान में क तेरापंथ सभा मदुरै के अध्यक्ष गौतम गोलेछा एवं ज्ञानशाला प्रभारी धनराज लोढ़ा की गरिमामयी उपस्थिति रही। परीक्षा का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से परीक्षा व्यवस्थापिका बबिता लोढ़ा द्वारा किया गया। इसके पश्चात सभी प्रशिक्षिकाओं ने अपने-अपने चयनित वर्गों के बच्चों की परीक्षा सुचारु रूप से संपन्न करवाई। इस परीक्षा में कुल 13 बच्चों ने भाग लिया। उक्त जानकारी ज्ञानशाला संयोजिका बबिता लोढ़ा ने दी।

बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

पर्वत पाटीया। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि डॉ मदन कुमार जी स्वामी आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में अभातेयुप द्वारा निर्देशित तेरापंथ युवक परिषद् पर्वत पाटीया तेरापंथ भवन, पर्वत पाटीया में बारहव्रत दीक्षा कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ।

मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ। मुनिश्री ने अपने वाणी से 12 व्रतों के गूढ़ सिद्धांतों को इतने सरल, सहज और व्यावहारिक रूप में समझाया कि हर उपस्थित श्रावक श्राविकाओं के मन में आत्म-संयम और साधना की भावना स्वतः जाग्रत हो उठी।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन प्रतिष्ठान

सूरत। लाडनूं निवासी सूरत प्रवासी अजय पगारिया के सुपुत्र कुणाल पगारिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतम वेदमूथा, नरेन्द्र भंसाली ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत। धानेरा निवासी सूरत प्रवासी रिद्धी रिकिन शाह के नूतन गृह प्रवेश का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन बुचा, विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार सानंद सम्पन्न करवाया।

कांटाबांजी। दीनदयाल विमल जैन, दीपक जैन, बिंदु जैन, सौरभ जैन एवं गौरव जैन निवासी काँटाबांजी के नूतन गृहप्रवेश कार्यक्रम का आयोजन उनके पारिवारिक जनो की उपस्थिति में जैन संस्कार विधि से करवाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्कारक अंकित कुमार जैन द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण कर जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पादित करवाया गया।

नामकरण संस्कार

गंगाशहर। सुशील-उर्मिला देवी बैद के सुपुत्र एवं पुत्रवधू श्रेयांस-प्रीति बैद के नवजात पुत्ररत्न का नामकरण संस्कार हरिमोहन सिपानी नोखा रोड, गंगाशहर में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। जैन संस्कारक देवेन्द्र डागा, भरत गोलछा एवं विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण करवाया गया।

लिलुआ। कुलदीप–प्रतीक्षा पटावरी (सुपुत्र दिलीप जयश्री पटावरी, गंगाशहर निवासी– मानकेचर, आसाम प्रवासी) के पुत्र रत्न का नामकरण जैन संस्कार विधि से लिलुआ स्थित संगिनी बैंक्वेट में जैन संस्कार विधि द्वारा उपासक एवं संस्कारक अरुण नाहटा और संस्कारक मनीष डागा ने पुरे मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका बहनों का हुआ सम्मान

बेंगलुरु।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के तत्वाधान में युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमार जी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य में बेंगलुरु ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों का सम्मान समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन गांधीनगर में किया गया। वर्ष 2024 -25 के अंतर्गत ज्ञानशाला प्रकोष्ठ महासभा द्वारा पुरस्कृत होने पर बेंगलुरु स्तरीय बैंगलोर तेरापंथ सभा द्वारा संचालित 32 ज्ञानशालाओं की 200 सेवारत प्रशिक्षिका बहनों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर गांधीनगर में संचालित समण संस्कृति विभाग जैन विद्या के प्रशिक्षकों का सम्मान किया गया। डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ने कहा ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनें ज्ञान दान करके महान निर्जरा कर रही है। तेरापंथ संघ में ज्ञानशाला का सुव्यवस्थित संचालन हो रहा है। इससे भावी पीढ़ी के संस्कारों का निर्माण सुगमता से आगे बढ़ रहा है। मुनिश्री ने बेंगलुरु तेरापंथी सभा द्वारा संचालित इतने बड़े नेटवर्क की प्रशंसा करते हुए कहा तेरापंथ सभा गांधीनगर संस्कारों को सुरक्षित रखने में महान योगदान कर रही है। शुभ भविष्य का निर्माण करने में अपना योगदान दे रही है। सभी पदाधिकारी कार्यकर्ता एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं साधुवाद के पात्र हैं। मुनि आदित्य कुमार ने गीतप्रस्तुत किया।

क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया ने विचार व्यक्त किये, संचालन बबीता चोपड़ा ने किया। सभा के मंत्री विनोद जी छाजेड़ ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए बताया कि मुनि श्री के श्रम से इस वर्ष तीन नई ज्ञानशालाओं की शुरुआत हुई है आभार ज्ञापन सुभाष पोखरना ने किया।

सर्वाइकल कैंसर जागरूकता अभियान का आयोजन

राउरकेला।

आरोग्यम निरामय प्रोजेक्ट के अंतर्गत राउरकेला में सर्वाइकल कैंसर जागरूकता अभियान शुरू किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वाधान में संचालित आरोग्यम निरामय प्रोजेक्ट के अंतर्गत सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम एवं जागरूकता के उद्देश्य से तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला द्वारा एक विशेष अभियान की शुरुआत की गई।

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित जागरूकता बैनर का अनावरण तेरापंथ भवन बसंती, राउरकेला में किया गया। कार्यक्रम में सरक्षिकाएं, परामर्शिकाएं, अध्यक्षा, मंत्रीगण तथा अन्य सदस्य बहनें उपस्थित रहीं। महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर से संबंधित आवश्यक जानकारी देने हेतु जागरूकता पैम्प्लेट्स का वितरण भी किया गया। मंडल की अध्यक्षा संगीता दुगड़ ने सभी महिलाओं को ये टेस्ट करवाने के लिए प्रेरित किया।

इस जन-जागरूकता अभियान को सफल बनाने हेतु पूरी टीम सहयोग करे, यह आह्वान किया गया। मंत्री नीतू कोठारी ने सबका हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

संबोधि

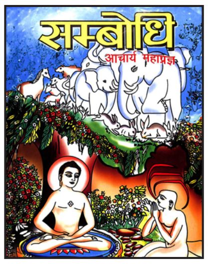

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

रस वस्तुओं में नहीं है, किन्तु वस्तुएं रस का निमित्त बनती हैं, इसलिए रस को बाह्य तप में रखा है। साधना की पूर्व-भूमिका में रस-विजय की अपेक्षा है। साधना की प्रखरता, उच्च भूमिका तथा सिद्धि के पश्चात् उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। जहां कामना-वासना ही शान्त हो जाती है वहां फिर वस्तुओं का क्या महत्त्व रहता है? वस्तुओं में जहां से रस अभिव्यक्त होता है, जीतना उसे है। जैसे बाहर रस है वैसे भीतर भी रस है। बुद्ध ने कहा-अमृत बरस रहा है। कबीर कहते हैं- 'इस गगन गुफा में अजर झरै', क्या यह बाहर दिखाई दे रहा है? यह किसी दूसरी दुनिया की झलक है। वह सबसे भीतर है। उसे पाना है। उसके सामने पदार्थों के रस स्वतः तुच्छ हो जाते हैं। गीता में कहा है- 'रसवर्ज रसोप्यस्य, परं दृष्ट्वा निवर्तत'- परम तत्व के दर्शन का रसास्वादन कर लेने के बाद अन्य रसों से साधक निवृत्त हो जाता है।

रस-विजय के लिए रस के केन्द्र पर ध्यान देना चाहिए। इन्द्रियां सिर्फ संवाद सम्प्रेषण करती हैं। वे संवाद मस्तिष्क में पहुंचते हैं। मस्तिष्क का संबंध किसी अन्य से है। फिर उनमें प्रियता और अप्रियता का भाव प्रकट होता है। जैसा है वैसा जान लेना, प्रिय में राग नहीं करना और अप्रिय से घृणा नहीं करना, सिर्फ शांत होकर देखते रहना, जो-जो तरंगें उठत्ती हैं, उनके उठने और गिरने को बस, देखना है। मन का योग विषयों से नहीं जोड़ना है, किन्तु उसे देखने वाले (द्रष्टा) के साथ जोड़ना है। द्रष्टा की घनीभूत अवस्था में रसों की अनुभूति का महत्त्व नहीं रहता।

रस का अनुभव क्षणिक है, किन्तु उसकी स्मृतियां व्यक्ति को दीर्घकाल तक सताती रहती हैं। कण्ठ से नीचे उतरने के बाद सब कुछ भोजन मिट्टी हो जाता है, इसे सिर्फ दोहराने या कथन करने से नहीं, अपितु प्रत्यक्ष अनुभव में उतारना है। जिस दिन यह सत्यता स्पष्ट हो जाती है, उस दिन केवल जीवन-निर्वाह के लिए भोजन रह जाता है। साधक ध्येय को सतत अविस्मृत रखते हुए पदार्थों के वास्तविक स्वरूप को देखे।

(5) कायक्लेश

इसका सीधा सरल अर्थ है-काया-कष्ट । मन शरीर का ही सूक्ष्म अंश है। जितने कष्ट उत्पन्न होते हैं सब काया में होते हैं। उत्पत्ति कष्ट है। उसके पीछे मृत्यु संलग्न है। जो पैदा होता है, वह मरणधर्मा है। हिमालय पर शिवजी के सामने अचानक कोई धमाका हुआ, तब सामने स्थित नन्दी ने पूछा- 'भगवन्!' यह किसकी ध्वनि हुई? (क्रमशः)

श्रमण महावीर

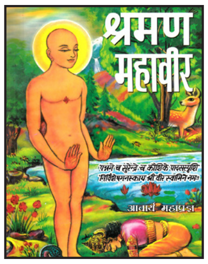

सह-अस्तित्व और सापेक्षता

गौतम ने पूछा- 'भन्ते! जीव शाश्वत है या अशाश्वत?'

भगवान् ने कहा- 'गौतम! जीव शाश्वत भी है और अशाश्वत भी है।'

'भन्ते! दोनों कैसे ?'

'पर्याय की ऊर्मियों के तल में जो चेतना का स्थिर शान्त सागर है, वह शाश्वत है। उस सागर में ऊर्मियां उन्मज्जित और निमज्जित होती रहती हैं, वे अशाश्वत हैं। ऊर्मियों का अस्तित्व सागर से भिन्न नहीं है और सागर का अस्तित्व ऊर्मियों से भिन्न नहीं है। ऊर्मि-रहित सागर और सागर-रहित ऊर्मि का अस्तित्व उपलब्ध नहीं होता। इसीलिए मैं कहता हूं कि जीव शाश्वत भी है और अशाश्वत भी है। पर्यायों के तल में तिरोहित चेतना के अस्तित्व को देखें तब हम कह सकते हैं कि जीव शाश्वत है। चेतना के अस्तित्व पर उफनते पर्यायों को देखें तब हम कह सकते हैं कि जीव अशाश्वत है।

मूल तत्त्व जितने थे, उतने ही हैं और उतने ही होंगे। उनमें जो है, वह कभी नष्ट नहीं होता और जो नहीं है, वह कभी उत्पन्न नहीं होता। वे अवस्थित हैं, उत्पाद और विनाश के चक्र से मुक्त हैं। वे दो हैं-चेतन और अचेतन। वे दोनों स्वतन्त्र अस्तित्व हैं। इनमें अत्यन्ताभाव है। यहां अरस्तू का तर्क महावीर के नय से अभिन्न हो जाता है। अरस्तू का तर्क है कि 'अ' 'अ' है और 'अ' कभी 'क' नहीं हो सकता। 'क' 'क' है और 'क' कभी 'अ' नहीं हो सकता। महावीर का नय है कि चेतन चेतन है, चेतन कभी अचेतन नहीं हो सकता। अचेतन अचेतन है, अचेतन कभी चेतन नहीं हो सकता।

हम मूल तत्त्वों को पर्यायों के माध्यम से ही जान पाते हैं। पर्यायों का जगत बहुत बड़ा है। यह उत्पन्न होता है और विलीन होता है। पल-पल बदलता रहता है। यहां अरस्तू का तर्क महावीर के नय से भिन्न हो जाता है। पर्याय-जगत् के बारे में महावीर का नय है कि 'अ' 'अ' भी हैं और 'अ' 'क' भी है। 'क' 'क' भी है और 'क' 'अ' भी है। 'अ' 'क' हो सकता है और 'क' 'अ' हो सकता है।

भ्रमर काला है, पर वह काला ही नहीं है। वह पीला भी है, नीला भी है, लाल भी है और सफेद भी है।

चीनी मीठी है, पर वह मीठी ही नहीं है। वह कड़वी भी है, खट्टी भी है, कषैली भी है और तीखी भी है।

गुलाब का फूल सुगंधित है पर वह सुगंधित ही नहीं है। वह दुर्गन्धित भी है।

अग्नि उष्ण है, पर वह उष्ण ही नहीं है, वह शीत भी है।

हिम शीत है, पर वह शीत ही नहीं है, वह उष्ण भी है।

तेल चिकना है, पर वह चिकना ही नहीं है, वह रूखा भी है।

राख रूखी है, पर वह रूखी ही नहीं है, वह चिकनी भी है।

मक्खन मृदु है, पर वह मृदु ही नहीं है, वह कठोर भी है।

लोह कठोर है, पर वह कठोर ही नहीं है, वह मृदु भी है।

रूई हल्की है, पर वह हल्की ही नहीं है, वह भारी भी है।

पत्थर भारी है, पर वह भारी ही नहीं है, वह हल्का भी है।

व्यक्त पर्यायों को देखकर हम कहते हैं कि भ्रमर काला है, चीनी मीठी है, गुलाब का फूल सुगंधित है, अग्नि उष्ण है, हिम शीत है, तेल चिकना है, राख रूखी है, मक्खन मृदु है, लोह कठोर है, रूई हल्की है और पत्थर भारी है। यदि व्यक्त पर्याय अव्यक्त और अव्यक्त पर्याय व्यक्त हो जाए या किया जाए तो भ्रमर सफेद, चीनी कड़वी, गुलाब का फूल दुर्गन्धित, अग्नि शीत, हिम उष्ण, तेल रूखा, राख चिकनी, मक्खन कठोर, लोह मृदु, रूई भारी और पत्थर हल्का हो सकता है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री रंभांजी (पदराड़ा) दीक्षा क्रमांक 220

साध्वीश्री घोर तपस्विनी थी। आपने जो विशाल तपस्या की उसके आश्चर्यजनक लम्बे चौड़े आंकड़े इस प्रकार हैं- 2/15, 3/10, 4/20, 6/16, 8/5, 9/7, 10/2, 11/1, 15/1, 16/1, 21/1, 28/1, 31/1 यह तपपानी के आधार से किया। 7/1, 10/2, 11/1, 13/1, 14/1, 15/1, 18/1, 19/1, 20/1, 22/1, 29/1, 30/2, 31/1, 46/1, 53/1, 63/1, 142/1, छहमासी/1, 19/(साधिक सवा छहमासी), साढ़े छहमासी/1 यह तप आछ के और पानी के आधार से किया।

– साभार : शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

जयाचार्य की लोकप्रिय कृति : चौबीसी

गीत-सख्या	तिथि
१,२	भाद्रव शुक्ला दशमी
३,४	भाद्रव शुक्ला एकादशी
५,६	भाद्रव शुक्ला द्वादशी
७,८	भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी
९, १०, ११, १२, १३, १४	भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा
१५, १६, १७, १८	आश्विन कृष्णा प्रथमा
१९, २०	आश्विन कृष्णा तृतीया
२१, २२, २३, २४	आश्विन कृष्णा चतुर्थी

अन्तर्वस्तु

इस स्तुति-काव्य में तात्त्विक विश्लेषण एवं आध्यात्मिक सूत्र भी उपलब्ध हैं।

तात्विक विश्लेषण : गुणस्थान

प्रस्तुत काव्य की चौदहवीं गीतिका में गुणस्थानों के माध्यम से साधना की भूमिकाओं पर प्रकाश डाला गया है। तीर्थकर चौथे गुणस्थान से सीधे सातवें गुणस्थान की छलांग भरते हैं। आध्यात्मिक विकास के सार्वभौम नियम का उल्लेख करते हुए आचार्य कहते हैं- तीर्थंकर, बलदेव, वासुदेव, देव आदि पंचम गुणस्थान का स्पर्श नहीं करते - आदि-आदि गुणस्थान संबंधी तथ्यों की जानकारी से भरी हुई यह गीतिका मननीय है।

निक्षेपवाद

तेरहवीं गीतिका में आचार्यश्री ने निक्षेपवाद का स्पर्श किया है। भगवान विमल का स्तवन करते हुए वे कहते हैं- नाम, स्थापना और द्रव्य निक्षेप से विमल होने से आत्म-शुद्धि का उद्देश्य सिद्ध नहीं होता। उसके लिए 'भाव निक्षेप' से विमल होना आवश्यक है। द्रव्य तीर्थंकर और भाव तीर्थंकर की भेदरेखा खींचते हुए कृतिकार कहते हैं- 'गृहस्थ अवस्था और केवलज्ञान प्राप्ति से पूर्व अवस्था तक तीर्थंकर द्रव्य तीर्थंकर एवं कैवल्य-प्राप्ति के बाद वे भाव तीर्थंकर बनते हैं।

भगवत्-स्तुति-फल

अष्टम गीत में भगवान को स्तुति का आनुषंगिक फल बताते हुए रचनाकार कहते हैं–

नरेन्द्र पद पामै सही, चरणसहित ध्यान तन मन्न हो।
अहमिन्द्र पद पामै बलि, कियां निश्चल थारो भजन्न हो ।।

प्रभु-भक्ति में निरत गृहस्थ 'नरेन्द्र' पद पा सकता है। किन्तु चारित्र (साधुत्व) का पालन करने वाला व्यक्ति ध्यान, भजन से अगले जन्म में नरेन्द्र नहीं बनता। वह अहमिन्द्र (उच्च कोटि का देव) पद को प्राप्त हो सकता है।

अनुकम्पा

सतरहवीं गीतिका में अनुकम्पा की संक्षिप्त एवं विशद व्याख्या की गई है – जिनेश्वर ने दो प्रकार की अनुकम्पा बतलाई है। सावद्य अनुकम्पा और निरवद्य अनुकम्पा। असंयमी प्राणी के जीने की कामना सावद्य अनुकम्पा (सांसारिक दया) है। सका आध्यात्मिक पथ-दर्शन करना आदि निरवद्य अनुकम्पा (पारमार्थिक दया) है।

प्रश्नोत्तर का विचित्र प्रकार

जैन सृष्टिवाद के अनुसार ऊर्ध्वलोक में स्थित अनुत्तर विमान के देव सर्वाधिक ऋद्धिसंपन्न होते हैं। अन्य देवों की भांति मनुष्यलोक में उनका यातायात नहीं होता। अपनी जिज्ञासा का समाधान पाने के लिए वे स्वस्थान से ही प्रश्न पूछते हैं और मर्त्यलोक में स्थित तीर्थंकर उनका उत्तर देते हैं। तीर्थंकरों द्वारा प्रदत्त उत्तर को वे देव अवधि ज्ञान (अतीन्द्रिय ज्ञान) से जान लेते हैं। यह विचार-संप्रेषण या टेलीपेथी का उत्कृष्ट उदाहरण है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

फरवरी 2026
सप्ताह के विशेष दिन

11 फरवरी
भगवान
सुविधिनाथ च्यवन
कल्याणक

13 फरवरी
भगवान ऋषभ
केवलज्ञान
कल्याणक

14 फरवरी
भगवान
श्रेयांस नाथ जन्म,
भगवान मुनिसुव्रत
केवलज्ञान कल्याणक

15 फरवरी
भगवान
श्रेयांसनाथ दीक्षा
कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री मिलापचंदजी (बीदासर) दीक्षा क्रमांक 497

मुनिश्री की तप में विशेष रूचि थी। क्रमशः उस क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए आपने तपस्वी मुनियों की कोटि में अपना नाम अंकित करवा लिया। आपके द्वारा की गई तप तालिका इस प्रकार है– पानी के आगार से– उपवास/980, 2/36, 3/33, 4/13, 5/12, 6/1, 7/2, 8/2, 9/1। छाछ के आगार से:– 8/1, 10/1, 17/1, 31/3, 33/1, 47/1, 51/1, 53/2, 65/1, 87/1, 91/1, चौमासी/1, 259/1, 445/1, 462/1।

– साभार : शासन समुद्र –

162वें मर्यादा महोत्सव पर विविध आयोजन

सुजानगढ़

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी सुप्रभा जी एवं साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सानिध्य में 162वां मर्यादा महोत्सव मनाया गया। साध्वी मनीषाश्री जी ने मर्यादा महोत्सव को एक कहानी के माध्यम से समझाया। मर्यादा में रहकर कैसे जीवन जीया जाए। मर्यादा हमारा जीवन का मूल मंत्र है। संगठन,परिवार यह सभी में मर्यादा का अनुशासन होना जरूरी है। हम मर्यादा को लक्ष्मण रेखा भी बोल सकते हैं। मर्यादा में रहकर हम अपना और अपने संघ का विकास कर सकते हैं। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने एक प्रसंग के माध्यम से बताया कि हमारा यह धर्म संघ प्राणवान धर्म संघ है और कोई भी प्राणवान तभी बन सकता है जब हम एक दूसरे की सुनते हैं। शासन श्री साध्वी सुप्रभाजी ने कहा कि यह दिवस जयाचार्य की देन है और आचार्य भिक्षु ने संघ की मर्यादा को बांधा है। महापुरुष जितने भी जन्म लेते हैं उनका दिमाग कंप्यूटर की तरह होता है। अनेक मर्यादाओं का उन्होंने निर्माण किया हमारे ऊपर मर्यादा का छत्र रख दिया है। साधना और भावना से संघ का विकास होता है। मर्यादा पत्र का वाचन किया गया। सफल संयोजन साध्वी विज्ञप्रभा जी ने किया।

नई दिल्ली

अणुव्रत भवन में तेरापंथ धर्म संघ का 162वां मर्यादा महोत्सव आयोजित किया गया। कार्यक्रम शासनश्री मुनि विमल कुमार जी, बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी एवं मुनि अभिजीत कुमार जी आदि ठाणा-9 के मंगल सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि विमल कुमार जी ने मर्यादा महोत्सव की परंपरा और उसके महत्व पर संक्षिप्त विचार रखे। बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्बोधन में तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु जी के गुणों का स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने संघ को स्पष्ट मर्यादाओं के माध्यम से एक सुदृढ़ दिशा प्रदान की। उन्होंने कहा कि मर्यादाएँ केवल नियम नहीं होतीं, बल्कि वे संघीय जीवन को व्यवस्थित, सुरक्षित और उद्देश्यपूर्ण बनाती हैं। मर्यादा का सम्मान और उसका सम्यक उपयोग ही तेरापंथ की पहचान है, जिससे व्यक्ति और समाज दोनों में संतुलन बना रहता है। मुनिश्री अभिजीत कुमार जी ने मर्यादा को आत्मसंयम और अनुशासन से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष पर प्रकाश डाला । मुनिश्री मधुरकुमार जी, मुनिश्री अक्षयकुमार जी, मुनि धन्यकुमार जी, मुनि जागृतकुमार जी, मुनि ज्योतिर्मयकुमार जी ने अपने प्रासंगिक विचार रखें। मुमुक्षु खुशी सुराणा ने भी अपनी सारगर्भित अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन सभा दिल्ली उपाध्यक्ष विमल बैंगानी ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

राजमहेन्द्रवरम, आंध्रप्रदेश

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा 3 एवं मुनि हिमांशु कुमार जी ठाणा 2 के पावन सानिध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, राजमहेन्द्रवरम द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा भारतीय संस्कृति के इतिहास में अनेक उत्सवों की श्रृंखला में तेरापंथ धर्म संघ का मर्यादा महोत्सव अपनी अलग पहचान बनायें हुए हैं। यह पर्व लौकिकता से पृथक अलौकिक भाव चेतना से जुड़ा है। यह उत्सव तेरापंथ धर्म संघ का महाकुंभ है। मर्यादा और अनुशासन की भाव धारा से बंधा हुआ यह महोत्सव एक गुरु और एक विधान के प्रति समर्पित है। आचार्य भिक्षु ने संगठित नेतृत्व को बहुत महत्व दिया। मुनि हिमांशु कुमार जी ने कहा मर्यादा तेरापंथ धर्मसंघ का प्राण है। आचार्य भिक्षु ने संघ के विकास के लिए कुछ मर्यादाओं का निर्धारण किया जो आज संघ के लिए सुरक्षा कवच हैं, संघ की डोर है। मुनि हेमंतकुमार जी ने जीवन मे मर्यादाओं के महत्व को उजागर किया। मुनि जयेश कुमार जी ने अपने वक्तव्य में तेरापंथ की मर्यादाओं का भारतीय संविधान के साथ तुलना करते हुए उनकी उत्कृष्टता को प्रकट किया। राजमहेन्द्रवरम सभा अध्यक्ष राजेश लोढा ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि भव्य कुमार जी ने किया।

जयपुर

भिक्षु साधना केन्द्र श्याम नगर में रविवार को श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ का सर्वोच्च संघीय कार्यक्रम 'मर्यादा महोत्सव' का भव्य आयोजन हुआ। जिसमें आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि श्री तत्त्व रुचि जी'तरुण' एवं मुनि श्री संभव कुमार जी ने सान्निध्य प्रदान करते हुए अपने प्रेरक संदेश में कहा - मर्यादा कोई कानुन नहीं, कानून थोपा जाता है जबकि मर्यादाएं थोपी नहीं बल्कि स्वेच्छा से स्वीकार की जाती है। मुनि श्री जी ने कहा कि धार्मिक मर्यादाएं कोई बंधन नहीं हैं, ये तो बंधन मुक्ति का मार्ग है। मर्यादा से ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम महान और भगवान बने। मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने कहा कि - अनुशासन संगठन की रीढ़ है और विकास आधार है। बिना अनुशासन के कोई संगठन टिक नहीं सकता। साथ रहने के लिए मर्यादा व्यवस्था अनुशासन बहुत जरूरी है। शांति पूर्व सहवास और प्रगति का आधार है मर्यादा व्यवस्था और अनुशासन। मुनि संभव कुमार जी के कहा - किसिकी धार्मिक स्वतंत्रता में दखल देना उचित केसे हो सकता है? वास्तव में धर्म बल प्रयोग में नहीं, हृदय परिवर्तन में है। जीवन में वास्तविक बदलाव हृदय परिवर्तन या चेतना के रूपांतरण अथवा मस्तिष्कीय परिवर्तन से आता है। उन्होंने कहा - मर्यादा पालन के लिए मर्यादा के प्रति निष्ठा का जागरण जरूरी है। इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेन्द्र बांठिया ने कहा - मर्यादित व्यक्ति सम्माननीय बन जाता है। राजकुमार बरडिया ने गीत के साथ अपने वक्तव्य में कहा - तेरापंथी होना गौरव की अनुभूति होती है। ओमप्रकाश जैन ने कहा कि - मर्यादाओं का महोत्सव मनाने की परम्परा सिर्फ तेरापंथ में है।

काकटूर, आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश के काकटूर स्थित 24 तीर्थंकर तीर्थ धाम में तेरापंथ धर्म संघ का 162वां मर्यादा महोत्सव युगप्रधान आचार्य महाश्रमण के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी के सानिध्य में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा पल्लावरम द्वारा आयोजित किया गया। मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ जिसमें पल्लावरम, चेन्नई, बैंगलोर क्षेत्र के भी श्रद्धालु जन उपस्थित थे। मुनि दीप कुमार ने कहा -दुनिया का विलक्षण उत्सव मर्यादा महोत्सव है।- तेरापंथ का सर्वोच्च पर्व है मर्यादा महोत्सव। संसार में अनेक उत्सव मनाई जाते हैं किंतु मर्यादाओं का उत्सव विश्व में कहीं भी नहीं मनाया जाता केवल तेरापंथ में मनाया जाता है। इस दृष्टि से मर्यादा महोत्सव अनुपम है अद्भुत है और आकर्षण का केंद्र है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादाएं बनाई संघ पर महान उपकार किया श्रीमत जयाचार्य ने उसे महोत्सव का स्वरूप प्रदान कर विलक्षण कार्य किया। तेरापंथ धर्म संघ आश्वास है, विश्वास है, नंदनवन है, वातानुकूलित हे। यहां संघ और संघपति का संबंध बहुत गहरा होता है। मुनि काव्य कुमार ने संचालन करते हुए कहा - संघ की तेजस्विता बढ़ाने वाला है- मर्यादा महोत्सव। यह मर्यादा, अनुशासन, विनय, समर्पण और अप्रमाद का महोत्सव है। कार्यक्रम में पल्लावरम सभा के अध्यक्ष दिलीप भंसाली, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा लता गीडीया की प्रस्तुति रही।

भरूच

जैन स्थानक में आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम का समायोजना हुआ। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुड टू गुड बनने की प्रयोगशाला है मर्यादा, Man to supermen का फार्मूला है मर्यादा, Most Powerfull बनने का Attractive Art है मर्यादा। मर्यादा महोत्सव का आकर्षण क्यों रहा है! वर्तमान में है भविष्य में रहेगा? मर्यादोत्सव ऑक्सीजन ग्रहण की क्षमता देता है। प्रसन्नता का प्रोटीन देता है, विनम्रता का विटामिन देता है सहिष्णुता का सीरप देता है, वात्सल्य की वर्षा देता है, कार्य कुशलता का कार्बोहाइड्रेट देता है। मर्यादा महोत्सव योगक्षेम की प्रयोगशाला है। यह आयोजन आमोद-प्रमोद का उत्सव नहीं चार तीर्थ के उत्थान का संकल्प है। मर्यादा महोत्सव कहता है गम को करें डिलीट, खुशी को सेव, रिश्तों को रिचार्ज, डिसिप्लीन को डाउनलोड, गुस्से को होल्ड, मुस्कान को सेंड करे। जिंदगी को शानदार बनाएं सेवा का मूल्यांकन तेरापंथ की अमूल्य विरासत है। करोड़पति बेटों की मां की जैसी सेवा घर में नहीं होती। वैसी सेवा तेरापंथ में होती है। साधु साध्वी चिंता की चादर आचार्य के कंधों पर डालकर निंश्चिंत हो जाते हैं। आपने कहा मर्यादा रहे रहन सहन में, खान पान में, शयन जागरण में, कहां कैसे कपड़े पहने, स्थान की गरिमा बनाएं रखे भावों में रहे। मर्यादा की ले मशाल, संघ बना बेमिसाल, मर्यादा की ढाल कमाल, कर दे मालामाल, हमारा संघ, हमारे गुरू और हम बनेंगे नम्बर 1 साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने कहा कि मर्यादा को पवित्र नदी के साथ तुलना की है। मर्यादा को पवित्र पुस्तक और ईख के जैसे बताया और आचार्य भिक्षु ने राजमार्ग पर चलने की सलाह दी। इस बारे में विस्तार से बताया। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम भिक्षु पुण्य निधान कहलाए गीत का अपनी मधुर स्वर लहरियों के साथ संगान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विनम्रयशाजी ने किया। वड़ोदरा,भरूच, अंकलेश्वर तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया।

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार हैदराबाद महिला मंडल के द्वारा मर्यादा क्वेस्ट आओ खोजें मर्यादा का मर्म-कार्यक्रम का सफल आयोजन डी वी कॉलोनी सिकंदराबाद में किया गया। इस कार्यक्रम में महिला मंडल की परामर्शिका बहिनों और भूतपूर्व अध्यक्षों की उपस्थिति सराहनीय रही। संयोजिका बहिनों पुष्पा बरड़िया, प्रेम संचेती और पायल पारख ने कुशलतापूर्वक क्वीज का संचालन किया। यह आयोजन न केवल ज्ञानवर्धक रहा, बल्कि बहिनों में मर्यादा-बोध, एकता और सहभागिता की भावना को भी सुदृढ़ करने वाला सिद्ध हुआ। सहमंत्री मीनाक्षी सुराणा के आभार ज्ञापन के द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ।

साउथ हावड़ा

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में तेरापंथ धर्मसंघ का कुंभ 162वाँ मर्यादा महोत्सव समारोह में उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- धर्म उत्कृष्ट मंगल है अहिंसा, संयम, तप धर्म के लक्षण है। जिसका मन धर्म में रमा रहता है उसे देवता भी नमस्कार करते है। धर्म की प्रेरणा देने वाले संत, आचार्य आदि होते हैं। आचार्य भिक्षु तेरापंथ के प्रथम प्रवर्तक थे। वे एक निर्मल आचारवान और तत्ववेत्ता आचार्य ही नहीं थे, अपितु कुशल संघ संगठनकार भी थे। उन्होंने धर्म संघ को सुव्यवस्थित बनाने के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया। मर्यादा हालाहल नहीं गंगाजल है, मर्यादा संघर्ष नहीं उत्कर्ष है, मर्यादा बंधन नहीं निबंध है। मुनि ने आगे कहा- आचार्य भिक्षु भलीभांति जानते थे कि सामुदायिक जीवन में सामूहिक साधना में मर्यादाएं अत्यन्त आवश्यक है। यदि मर्यादाएं नहीं है तो नाना प्रकार की कठिनाईयां आएगी। आज बसंत पंचमी है जैसे प्रकृति हरी भरी खिली रहती है उसी प्रकार व्यक्ति को हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए। सेवा भाव रखना चाहिए। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की युवतियों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण उपाध्यक्ष बजरंग डागा ने किया। आभार संगठन मंत्री पवन बेंगानी व संचालन मुनि परमानंद ने किया।

77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर विविध आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर

तेरापंथ महिला मंडल, विजयनगर के तत्वावधान में देश के 77वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर एम सी लेआउट विजय नगर के सुभाष चंद्र बोस पार्क में निर्मित कन्या सुरक्षा सर्किल पर हर्ष और उल्लास के साथ राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। सभी बहनों ने राष्ट्रगान का संगान किया। अध्यक्ष महिमा पटावरी ने सभी का स्वागत किया।

जयपुर

77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर मानवता की सेवा के उद्देश्य से तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर एवं रेलवे सुरक्षा बल, जयपुर मंडल (उत्तर पश्चिम रेलवे) के संयुक्त तत्वावधान में RPF गणपति नगर स्टेडियम में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इंटरनल हार्ट केयर हॉस्पिटल ब्लड बैंक के सहयोग से आयोजित इस शिविर में कुल 51 यूनिट रक्त का संग्रहण किया गया। अध्यक्ष रवि छाजेड़, मंत्री शरद बरड़िया, सहित सभी कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा।

नागपुर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा नागपुर द्वारा अणुव्रत भवन के प्रांगण में 77 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडा फहराना कार्यक्रम आयोजित किया गया। झंडा फहराना कार्यक्रम सभा अध्यक्ष विजय रांका, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री अंकुर बोरड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राहुल कोठारी एंव आनंदमल सेठिया, महेंद्र बोरड़, मीनू बोथरा, प्रीति धारीवाल द्वारा किया गया।

टिटिलागढ

कन्या सुरक्षा सर्कल पर तिरंगा फहराकर तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ ने 77 वां गणतंत्र दिवस बहुत हर्षो उल्लास के साथ मनाया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात नगर पालिका अध्यक्ष ममता जैन ने ध्वजारोहण किया।

रतलाम

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवम डेंटल केयर रतलाम पर 77वे गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य मे प्रतिवर्षानुसार तेरापंथ युवक परिषद द्वारा ध्वजारोहण समारोह का आयोजन किया गया। समाज के वरिष्ठ जनों द्वारा ध्वजारोहण किया गया तत्पश्चात सामूहिक रूप मे राष्ट्रगान का संगान किया गया।

पृष्ठ 2 का शेष

आचार्य की आज्ञा...

ऐसी संस्था का अधिवेशन होने वाला है। महासभा द्वारा धार्मिक आध्यात्मिक सेवा व विकास का प्रयास होता रहे। आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में आज विद्यार्थी भी उपस्थित थे। इस संदर्भ में आचार्य प्रवर ने विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा दी। विद्यार्थियों को इन तीनों प्रतिज्ञाओं का संकल्प करवाया। आचार्यश्री ने कहा कि महासभा की जगह-जगह स्कूल खोलने की योजना चल रही है। महासभा के शिक्षा के अभियान में शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार की बात भी रहे, यह काम्य है। तत्पश्चात तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य पदमचंद पटावरी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभ के अध्यक्ष श्री मनसुखलाल सेठिया, अभातेयुप के अध्यक्ष पवन मांडोत, अभा तेरांपथ महिला मंडल की अध्यक्षा सुमन नाहटा, तेरापंथ प्रोफेसनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, अणुविभा के अध्यक्ष प्रतापसिंह दूगड़, जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा, जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट मान्य विश्वविद्यालय के कुलपति बच्छराज दूगड़, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के अध्यक्ष श्री के.सी.जैन सभी ने अपनी संस्थाओं से संदर्भित अभिव्यक्तियां दी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के मुख्यन्यासी महेन्द्र नाहटा ने विशिष्ट दान-दाताओं के नामों की घोषणा की। दानदाताओं के परिवारों ने पूज्य-प्रवर के सम्मुख उपस्थित होकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। अणुविभा द्वारा क्लास वन टू के लिये जीवन विज्ञान की पुस्तकों का आचार्य प्रवर के समक्ष लोकार्पण किया। महासभा के वार्षिक प्रतिवेदन को भी आचार्य प्रवर के समक्ष लोकार्पित किया गया।

बोलती किताब

एसो पंच णमोक्कारो

जैन आगम-वाङ्मय में नमस्कार महामंत्र का स्थान अनादि से अत्यंत पवित्र और मंगलकारी माना गया है। प्राणी को पंचपरमेष्ठियों के प्रति श्रद्धा जागृत कर आत्म-शुद्धि की दिशा में प्रेरित करने वाला यह मंत्र अनेक आगमों, टीकाओं और व्याख्याओं में विविध रूपों में संदर्भित मिलता है। लेकिन इसका सर्वप्रथम प्रामाणिक रूप कहाँ अंकित हुआ तथा इसका रचनाकार कौन माना जाए—इन प्रश्नों पर विद्वानों में मतभेद रहा है। अनेक आचार्यों ने इसे आदि-मंगल के रूप में स्वीकृत किया और सूत्रों के प्रारंभ में लिखने की परंपरा भी प्रचलित पाई जाती है।

अभयदेवसूरि, वीरसेनाचार्य, मलयगिरि, वज्रस्वामी आदि अनेक मनीषियों ने इसकी व्याख्या, उद्धार और टीका की, परंतु मूलस्रोत स्पष्ट नहीं हो पाया। महावीर स्वामी के काल से पूर्व ही नमस्कार की परंपरा विद्यमान होने के संकेत उपलब्ध हैं। खारवेल के पुरालेख में 'णमो अरहंताणं' और 'णमो सव्व सिद्धाणं' जैसे पद मिलते हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि मंत्र का मूल तत्व अति प्राचीन है और आचार्य पुष्पदंत या अन्य परवर्ती आचार्यों से भी पहले प्रयोग में था।

नंदी और आवश्यक के प्रकरणों में सामायिक के प्रारंभ और अंत में पंचपरमेष्ठी को नमस्कार करने का निर्देश मिलता है। इससे यह मान्यता प्रबल होती है कि नमस्कार महामंत्र मूलतः सामायिक अध्ययन का अंग रहा होगा। सिद्ध–अर्हतादि की वंदना के माध्यम से साधक आत्मसंयमन के लिए प्रवृत्त होता है। यही कारण है कि कई आगमों के प्रारंभ में नमस्कार लिखने की परंपरा बनी और इसे सर्वश्रुताभ्यंतरवर्ती माना गया।

मूलस्रोत के विवाद के साथ-साथ मंत्र के पदक्रम की चर्चा भी प्राचीन ग्रंथों में मिलती है। सिद्ध–अर्हत–आचार्य–उपासक–साधु के क्रम को पूर्वानुपूर्वी माना गया है, क्योंकि सिद्ध अर्हत के उपदेश द्वारा जाने जाते हैं और ज्ञापक रूप में अधिक निकट तथा पूज्य माने गए। स्पष्ट है कि नमस्कार महामंत्र केवल वंदना का सूत्र नहीं, बल्कि दर्शन, साधना और श्रुत-परंपरा की गहन ऐतिहासिक निरंतरता का द्योतक है—जिसकी मूल जड़ें सामायिक और पंचपरमेष्ठी वंदना में निहित प्रतीत होती हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

सबके प्रति शिष्टाचार...

जैन विश्व भारती में हमारा योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में लम्बा प्रवास निर्धारित है। यह योगक्षेम वर्ष, विकास व प्रशिक्षण का सुअवसर है और इसका लाभ उठाने का प्रयास होना चाहिए। आचार्य प्रवर ने आज के दिन के लिए स्वरचित गीत का संगान किया। पूज्य प्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने भी गीत का संगान किया। आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि लाडनूं प्रवास के बाद विहार करना है। सरदारशहर में एक महीने का प्रवास, व श्रीगंगानगर अंचलन की यात्रा आदि का वर्णन करते हुए श्रीगंगानगर अंचल के रायसिंहनगर में वर्ष 2027 की अक्षय तृतीया तथा जन्मोत्सव व पट्टोत्सव का आयोजन श्रीगंगानगर में करने की घोषणा की। साथ ही हनुमानगढ़ जिले में भी यात्रा के स्थानों की जानकारी दी। तदुपरान्त आचार्यश्री ने पंजाबवासियों पर कृपा बरसाते हुए वर्ष 2029 का चातुर्मास महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल- फागला, लुधियाना में करने की घोषणा की। वर्ष 2029 का मर्यादा महोत्सव चंडीगढ़ में करने की घोषणा की, इसके उपरांत जम्मु व शिमला की भी यात्रा करने की घोषणा की। आचार्य प्रवर ने पंजाब के अनेक क्षेत्रों में भी पधारने की घोषणा कर पंजाब वासियों को भाव विभोर कर दिया।

पूज्य प्रवर ने मुमुक्षु दिव्या, मुमुक्षु कोमल को साध्वी प्रतिक्रमण सीखने की अनुमति प्रदान की। मुमुक्षु प्रिया को 6 मार्च को साध्वी दीक्षा, मुमुक्षु भावना को 20 सितंबर 2026 को समणी दीक्षा देने की घोषणा की। इसके साथ ही आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों के विहार क्षेत्र व चातुर्मासिक क्षेत्रों की घोषणा की तदुपरांत आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित साधु, साध्वी व समणीवृंद पाण्डाल में पंक्तिबद्ध हुए और लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्य प्रवर की आज्ञा से श्रावक समाज खड़ा हुआ और पूज्य प्रवर ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कर संकल्पों को स्वीकार कराया। इस आयोजन में आचार्य प्रवर सहित 55 संत, 179 साध्वियां, 30 समणीवृंद व 33 मुमुक्षु उपस्थित रही। आचार्यश्री ने संघ गान के उपरांत 162वें मर्यादा महोत्सव की सुंसपभता की घोषणा की।

पृष्ठ 12 का शेष

दुनिया में अभयदान...

किसी नाम का स्मरण करके भी हम भय के स्थान पर अभय को स्थापित करने का प्रयास कर सकते हैं। आज गणतंत्र दिवस है। भारत का 15 अगस्त 1947 को जो स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। स्वतंत्रता मिलना एक बात है। परंतु स्वतंत्रता का अच्छा उपयोग करना स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना विशेष बात होती है। जहां संविधान का अच्छा उपयोग करना स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना विशेष बात होती है। जहां संविधान का अच्छा पालन होता है और उसके प्रति जागरूकता होती है, यह अच्छी बात हो सकती है। कल हमने मर्यादा महोत्सव मनाया, मर्यादाओं के प्रति हमारे मन में जागरूकता और निष्ठा रहे, यह काम्य है।

मंगल प्रवचन के पश्चात मुनि तन्मय कुमारजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। सिद्धार्थ यश कोचर, महेन्द्र कोचर, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री पूजा सेठिया, नीलम सेठिया ने श्रद्धाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं और ज्ञानर्थियों ने प्रस्तुति दी। इससे पूर्व पूज्य प्रवर को सन्निधि में पूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार की वसुंधरा राजे दर्शनार्थ पहुंची इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। एवं समसामायिक विषयों पर चर्चाकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। छोटी खाटू मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों द्वारा श्रीमती वसुंधरा राजे का साहित्य से सम्मान किया।

मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिये : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी-खाटू।
21 जनवरी 2026

मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिये जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, शांतिदूत, आचार्यश्री महाश्रमणजी ने छोटी-खाटू प्रवास के द्वितीय दिवस अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ का मर्यादा महोत्सव निकट आ रहा है। अभी माघ महीने के शुक्ल पक्ष के पूर्ववर्ती दिन है।

मर्यादाओं का सामुदायिक जीवन मे कुछ अतिरिक्त महत्व होता है, यद्यपि मर्यादा व्यक्तिगत जीवन में भी साधना के क्षेत्र में सहायक बन सकती है। राग-द्वेष नहीं करना मूल तत्व है, यदि मोक्ष का साध्य बनाया गया है। यदि मोक्ष को साधना है तो उसका साधन राग द्वेषात्मक नहीं बन सकता। साध्य के अनुरूप ही यदि साधन होता है तो वह साधन, साध्य से मिलन करा सकता है।

मोक्ष अपने आप में राग-द्वेष मुक्तता की स्थिति होती है, इसलिए इसकी साधना भी राग-द्वेष मुक्ति की होनी चाहिये। मोक्ष में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन निरन्तरायता,

आत्म-रमण की स्थिति है, अतः उसकी साधना भी सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र की, सम्यक् ज्ञान और तप की भी हो सकती है। कुछ नियम-व्यवस्थाएं मूल साधन नहीं पर वे सहायक की भूमिका अदा कर सकते हैं। कुछ मर्यादाएं सहायक बन सकती है। जैसे साधुओं की वर्तमान में आचार व्यवस्था में मुखवस्त्रिका, रजोहरण, प्रमार्जनी, पात्र आदि रखे जाते हैं परंतु ये साधना के मूल तत्व नहीं है। इनको नहीं रखने वाला भी सिद्धावस्था को प्राप्त कर सकता है, क्योंकि ये मूल साधन मोक्ष के नहीं है, सहायक हैं। सहायक साधनों का भी कुछ अपना मूल्य हो सकता है। जैसे विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का एक विशेष परिधान होता है पर वह शिक्षा का मूल तत्व नहीं होता, किंतु स्कूल की मर्यादा व्यवस्था है तो उसे नहीं पहनने वाला मर्यादा की अवहेलना करने वाला होता है। स्कूल की मर्यादा को पालना विद्यार्थियों के लिये आवश्यक होता है। इस प्रकार मूल मर्यादाओं के साथ सहायक मर्यादाओं का पालन भी आवश्यक होता है। किसी संगठन की भी अपनी मर्यादाएं होती है, जो सहायक के रूप में होती है। जिसकी जो भी मर्यादाएं हैं और कानून होते हैं, वे भी मर्यादाएं होती है।

मर्यादा के अंतर रहने से सुरक्षा और उनका अतिक्रमण करने से कठिनाई और खतरा भी हो सकता है। हमारे यहां मर्यादा महोत्सव मनाया जा रहा है, इस व्यवस्था का शुभारंभ तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य श्री जयाचार्य ने किया था। लगभग 161 वर्ष बीत गए है और उनके समय शुरू हुआ क्रम आज भी चलता आ रहा है। वे मर्यादा महोत्सव के संस्थापक थे। मर्यादा महोत्सव का समय भी बहुत अनुकूल रखा गयाहै। माघ का महीना, जिसमें न अधिक सर्दी और न अधिक गर्मी रहती है।

साधु-साध्वी भी अपने चातुर्मास की संपन्नता कर गुरू इंगित के अनुसार इसमें सम्मिलित हो सकते है। यह एक वार्षिक महोत्सव-सा हो जाता है। अतः आदमी को अपनी मर्यादाओं में रहना चाहिये जिससे वह बुरे कर्मों से बच सकता है, सत्कर्मों में प्रवृत हो सकता है। इसलिए मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिये। मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में शासनश्री साध्वीश्री कानकुमारजी (चुरू) और शासनश्री साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़) की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। आचार्य प्रवर ने दोनों साध्वियों का संक्षिप्त परिचय प्रदान किया और उनके आध्यात्मिक उर्ध्वारोहण के लिये मंगल कामना की। आचार्य प्रवर ने चतुर्विध धर्मसंघ को चार लोगस्स का ध्यान करवाया। साध्वीद्वय की आत्मा के प्रति मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी व साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने आध्यात्मिक मंगल कामना की। तदुपरांत साध्वी महकप्रभा जी, साध्वी सिद्धांतप्रभा जी, समणी ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी कुसुमप्रज्ञा जी, साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी, मुनि पारसकुमारजी, साध्वी सन्मति प्रभाजी ने अपनी श्रद्धा भिव्यक्ति दी। सुनाम पंजाब की ओर से साध्वी कनकश्री के संदर्भ में प्रस्तुत दी गई।

डॉ. उषा जैन, नोखा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शुभकरण चोरड़िया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल नोखा ने गीत का संगान किया। लालचंद छाजेड़ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्य प्रवर के स्वागत में साध्वी जगतयशाजी ने भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के प्रशिक्षक -प्रशिक्षिकाएं आदि ने सामूहिक गीत की प्रस्तुत दी।

आदमी सम्यक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करे : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी-खाटू।
22 जनवरी 2026

मर्यादा महोत्सव से एक दिन पूर्व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक मोहन भागवत, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सन्निधि में पहुंचे।

मर्यादा समवसरण में शांति दूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के पधारने के कुछ समय पश्चात् ही आर एस एस प्रमुख आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंचे और आचार्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के मंगल महामंत्रोच्चार के बाद जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष तथा मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति छोटी खाटू के अध्यक्ष मनसुख लाल सेठिया ने सरसंघ चालक का वक्तव्य द्वारा स्वगात किया। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित श्रद्धालुओं को पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि भारत में बहुत अच्छे ग्रंथ है। संस्कृत, प्राकृत, पालि और अन्य कई भाषाओं में अनेक ग्रंथ उपलब्ध है। इन ग्रंथों में संग्रहीत अच्छी वाणियां भी अपने आप में रत्न होती है।

संस्कृत में कहा गया है कि धरती पर तीन रत्न है- पानी, अनाज और सुभाषित अच्छी वाणी भी एक रत्न होती है। शास्त्रों की कल्याणी वाणी से हमें मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। भारत का यह सौभाग्य है कि यहां की धरती पर अनेक संत हुए हैं और आज भी हैं। ऐसे ज्ञानी संतों के उपदेश सुनने को मिलें तो समय भी सार्थक हो सकता है और जीवन की दिशा भी अच्छी मिल सकती है। शास्त्र में कहा गया है कि- ''स्वयं सत्य खोजो।'' आदमी सम्यक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करे। अध्यात्म जगत में साधना द्वारा सच्चाई की शोध और सच्चाई की प्राप्ति हो सकती है। ज्ञान इंद्रियों की सहायता से भी हो सकता है दूसरा ज्ञान अतीन्द्रिय होता है, जो इन्द्रियों और मन की सहायता के बिना प्राप्त होता है। पहली प्रकार का ज्ञान परोक्ष और दूसरी प्रकार का ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान होता है जो

भीतर से प्रकट होता है। ज्ञान का हमारे जीवन में बहुत महत्व है ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है और ज्ञान के साथ आदमी को आचरण भी अच्छा बनाना चाहिए।

हमारे धर्मसंघ के मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय समारोह वसंत पंचमी से शुरु होने वाला है। समारोह का मूल दिन माघ शुक्ला सप्तमी है। मर्यादा हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। आदमी को अपने अनुशासन-मर्यादा में रहना चाहिए। राजतंत्र हो अथवा लोकतंत्र दोनों ही शासन प्रणालियों में अनुशासन। आवश्यक होता है। साधु का धर्म तो सहन करना होता है, लेकिन जहां देश की सुरक्षा की बात हो तो कुछ कड़ाई अथवा कार्यवाही भी करनी पड़ सकती है। हालांकि उस कड़ाई में शांति की स्थापना भूल में होती है। आज मोहन जी भागवत का आना हुआ है। बहुत अच्छी बात है। यों चातुर्मास में उनका आना प्रायः होता है परन्तु आज अतिरिक्त आना हुआ है। आगे जैन विश्व भारती भी है। आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंचालक श्री मोहन भागवत ने कहा कि परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर! हम लोग जो लाठी चलाते हैं, वह क्यों चलाते हैं, इस बात का स्मरण रखने के लिए ही आप जैसे संतो के पास आता हूँ। आज मेरा एकस्ट्रा आना हुआ है तो यह मेरा एकस्ट्रा लाभ है। पुस्तकों में अनेक बातें लिखी होती है, लेकिन उनसे बात पूरी नहीं होती। उनको अपने आचरण से बताने का कार्य भारत करता है। धर्म के पीछे जो सत्य है, उसे हमारे पूर्वज जानते हैं, बाहर के देशों की मदद के लिए आगे बढ़ता है। व्यवहार का संतुलन और अनुशासन भारत जानता है। जीवन को अच्छा बनाने के लिए त्यागी संतों की सन्निधि में उपस्थित होना होता है। मेरा यहां बार-बार आने का एकमात्र कारण है कि आचार्य श्री की सन्निधि में पहुंच कर आंखे खुल जाती है। मैं पुनः आचार्य श्री जी वंदन करता हूं। मंगल प्रवचन कार्यक्रम के उपरान्त भागवत जी और आचार्यश्री विभिन्न विषयक वार्तालाप का क्रम हुआ।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

जो वर्तमान में होता है, वह सही है

आचार्य भिक्षु ने वर्तमान का मूल्यांकन किया। उन्होंने बताया– धर्म और अधर्म की करनी वर्तमान में होती है। पहले और पीछे जो होता है, उससे उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता। प्रश्न उपस्थित हुआ– आप किसी व्यक्ति को त्याग कराते हैं और वह उसे तोड़ देता है। तो त्याग तोड़ने का पाप आपको भी लगेगा?

आचार्य भिक्षु दृष्टांत की भाषा में बोले– एक दुकानदार ने ग्राहक को कपड़ा बेच दिया। उस ग्राहक ने उस कपड़े को जिस मूल्य में खरीदा, उससे दूने मूल्य में बेच दिया। क्या उस दुकानदार को उससे लाभ होगा?

नहीं होगा।

उस ग्राहक ने कपड़ा खरीदा और उसे जला दिया। क्या उससे दुकानदार को कोई हानि होगी?

नहीं होगी।

हमने किसी व्यक्ति को त्याग दिलाया। उस समय जो लाभ हमें होना था, हो गया। उसके बाद वह त्याग पालेगा, उससे हमें कोई लाभ नहीं होगा और यदि तोड़ देगा तो उससे हमें कोई हानि नहीं होगी। जो वर्तमान में होता है, वही सही है।

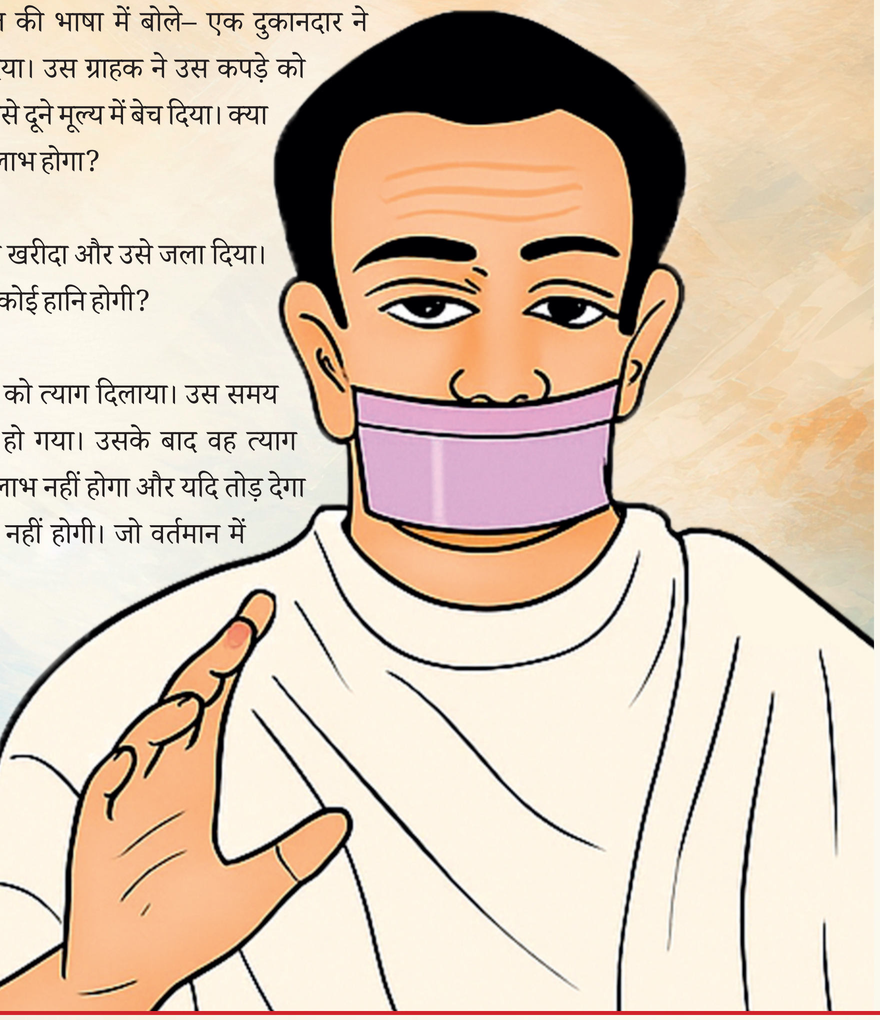

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

क्या पुण्य से मिलता है मोक्ष?

पुण्य-पाप की व्याख्या अनेक ग्रंथों में अनेक प्रकार से प्राप्त होती है। कोई इसे सुख-सुविधा का साधन मानता है तो कोई कुछ मानता है। कई-कई धर्म ग्रंथों में तो पुण्य की बड़ी महिमा गाई है। यहां तक की इसे स्वर्ग और मोक्ष तक की प्राप्ति का उपाय भी माना है। इसमें एक प्रश्न यह होता है की क्या सचमुच मोक्ष बिना पुण्य के नहीं मिल सकता? क्या पुण्य के लिए कोई कार्य करना अनुचित की कोटी में आता है। यदि हम जैन दर्शन के अनुसार बात करें तो पुण्य और पाप दोनों ही कर्म पुद्गल है। एक शुभ है दूसरा अशुभ। और जहां कर्म है वहां कर्म का फल भी होगा। फल की प्राप्ति संसार की प्रवृत्ति है और जहां प्रवृत्ति है वहां बंधन है। इसी अपेक्षा से संसार प्रवृत्ति का पथ है और मोक्ष निवृत्ति का क्योंकि संसार का अर्थ ही संसरण करना होता है। और मोक्ष में कर्म करने जैसा कुछ नहीं होता। वहां न मोह है न माया, न कर्ता है न भोक्ता, न उच्छवास है न नि:श्वास। वहां है तो सिर्फ है असीम शान्ति-पूर्ण निवृति।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

दुश्मन का सहयोग करने वाला भी दुश्मन

किसी ने पूछा– असंयंती जीव के पोषण में पाप बतलाते हो, उसका न्याय क्या है?

तब स्वामीजी बोले– किसी साहूकार के रुपयों की नौली कमर में बंधी हुई थी। उसे देख चोर ने उसका पीछा किया। आगे साहूकार और उसके पीछे चोर दौड़ रहा है। दौड़ते-दौड़ते चोर ठोकर खाकर नीचे गिर गया। तब किसी ने चोर को अफीम पानी पिलाकर तैयार कर दिया। उस अफीम खिलाने वाले को साहूकार का दुश्मन मानना चाहिए क्योंकि उसने दुश्मन का सहयोग किया है।

इसी प्रकार छह काय जीवों को मारने वाले का पोषण करता है उसे भी छह काय के जीवों का दुश्मन मानना चाहिए क्योंकि उसने दुश्मन का सहयोग किया है।

क्या आप जानते हैं?

जिस घर में सन्तान का जन्म हुआ हो, वहां तीन दिन तक गोचरी न कराएं। हॉस्पिटल में जन्मा बच्चा हॉस्पिटल से घर आ जाए तो जिस दिन जन्मा हो उस दिन से तीन दिन तक गोचरी न कराएं। इसी प्रकार मृत्यु के दिन से तीन दिन तक मृतक (तथा उसके पुत्रों के) के घर में गोचरी न कराई जाए, दिनों की गिनती तिथि के अनुसार की जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

॥ प्रतिदिन चौबीसी का संगान करें ॥

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 फरवरी - 08 फरवरी 2026

दुनिया में अभयदान है श्रेष्ठदान : आचार्यश्री महाश्रमण

छोटी खाटू।
26 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, शांतिदूत अखण्ड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत वाङ्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि भय एक संज्ञा है, वृति है। मोहनीय कर्म का ही अंग भय संज्ञा है। भय की संज्ञा दुर्बलता पैदा करने वाली होती है। आठ आत्माओं में एक मात्र कषाय आत्मा ऐसी है जो एकांत सावद्य है। एकांत अशुभ है जिनमें 16 प्रकृतियां- अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याखानी, संज्वलन चतुष्क (क्रोध, मान, माया, लोभ) की नौ कषाय और तीन दर्शन मोहनीय की होती है। मोहनीय कर्म के मूलतः दो विभाग है- दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय है। दर्शन मोहनीय के तीन प्रकार है- मिथ्यात्व और सम्यकत्व और मिश्र दर्शन मोहनीय होते है। शेष 25 भेद चारित्र मोहनीय के होते है।

हमारा सम्यकत्व दर्शन मोहनीय से संबद्ध है। दर्शन मोहनीय का क्षयोपशम, क्षय या उपशम है तो सम्यकत्व की प्राप्ति होती है। भय चारित्र मोहनीय के परिवार के अंतर्गत है। यह भय संज्ञा आदमी और अन्य प्राणियों में कई प्रकार बार उभरती है और आदमी डरने लग जाता है। जैन वाङ्मय में कहा गया- उन जिनों का तीर्थंकरों को नमस्कार है, जिन्होंने भय को जीत लिया है। सिद्ध भगवान के तो भय की कोई बात ही नहीं है, तीर्थंकर और केवली भगवान भी पूर्णतया अभय होते हैं। ग्यारहवें, बारहवें गुणस्थान वर्ती छद्मस्थ चारित्रात्माओं भी उपरी तौर पर भय से मुक्त होते हैं। ग्यारहवें गुण स्थान में भी भय उपशांत रूप में होता है, उदय रूप मे नहीं होता है। 10वें, 9वें, 8वें, 7वें गुणस्थान में भी योग्य रूप में भय नहीं होता। योग रूप में भय पहले से छठे गुणस्थान तक ही होता है। अतः छठे गुणस्थान तक प्राणी जिनमें मनुष्य और साधु सम्मिलित हैं, उनमें भय की संज्ञा को प्राप्त कर सकती है। अतः यदि यह संभव न हो सके तो किसी को डराना नहीं चाहिये। किसी में भय पैदा नहीं करना चाहिये। अभय के दो अर्थ हो सकते है- डरना नहीं और डराना नहीं। दोनों संदर्भों में भय को देख सकते हैं। हमारा जीवन अनित्य है अतः इस अनित्य जीवन लोक में हिंसा में आसक्त नहीं होना चाहिये। दूसरे प्राणियों को अभयदान का प्रयास करना चाहिये। दुनिया में अनेकदान हैं उनमें श्रेष्ठदान अभयदान देने को कहा गया है। छः काय के जीवों की हिंसा करने का त्याग कर देना उन जीवों के प्रति अभयदान हो जाता है। अतः मोहनीय कर्म के उदय से आदमी को भय लगने लगता है। ऐसी स्थिति में जप, ध्यान आदि का आलंबन लेना चाहिये।

(शेष पेज 9 पर)

अर्हम्

शासनश्री साध्वीश्री कानकंवर जी (चुरू) का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म संवत् :	वि.सं. 1985, कार्तिक शुक्ला 9
पिता :	माणकचंद जी
माता :	बरजी देवी
वैराग्य :	शादी के एक मास पूर्व।
दीक्षा :	गुरुदेव श्री तुलसी, चूरू वि.सं. 1999, कार्तिक कृष्णा 8
एक साथ दीक्षा :	14 संत, 14 सतियां (छोटी बहन मानकंवर जी साथ में)
पैदल यात्रा :	लगभग एक लाख कि.मी. से अधिक ।
स्वाध्याय :	प्रतिदिन लगभग 2000 गाथा।
कंठस्थ आगम :	दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नंदी, वृहत्कल्प।
शिक्षा :	संघीय पांच वर्ष की परीक्षा।
उपवास :	तपस्या ढाई हजार, एकासन- 140, आयंबिल 21, दश प्रत्याख्यान - 20, ढाई सौ प्रत्याख्यान-01 बार, बेलातेला 61, चोला-1, पंचोला-1, छह की तपस्या 1, अठाई -1
तिविहार संथारा :	13.01.2026 प्रातः 9:51 बजे आचार्य श्री महाश्रमणजी की आज्ञानुसार शासन गौरव साध्वीश्री राजीमती जी द्वारा।
चौविहार संथारा :	18 जनवरी 2026

देवलोकगमन : 19 जनवरी 2026 को सुबह 6:04 बजे

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत